Annual Subscription Fee Rs. 100/- 3rd December 2015

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में

सपरिवार वैदिक प्रशिक्षण शिविर

दि. 7 जनवरी 2016 से 10 जनवरी 2016 रविवार तक

स्थान : पंडित नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला, रामकोट, हैदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में पारिवारिक साधना प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का निर्णय लिया गया है। यह शिविर पंडित नरेनद्र भवन में **दिनांक 7 जनवरी 2016 गुरुवार से 10 जनवरी 2016 रविवार तक** आयोजित है । प्रशिक्षण हेतु साधकों को परिवार सहित **6-1-2016** के सायंकाल तक प्रशिक्षण स्थल पंडित नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला हैदराबाद पहूंचना पडेगा। जनवरी ठंड का मौसम है अतः आवश्यक कपडे लेते आएं । अन्य व्यवस्था सभा की ओर से की जाएंगी । परिवारों की संख्या को सीमित रखा गया है । अतः परिवार अपना नाम सभा में प्रति व्यक्ति रु. **100/-** जमा करवाकर अंकित करवा लें।

शिविर **आचार्य सोमदेवजी शास्त्री** मुम्बई के सानिध्य में **स्वामी सुधानन्दजी राउरकेला** उड़िसा व **आचार्या पवित्रा वेदालंकारजी** गुरुकुल हाथरस तथा **पंडित कैलाशजी कर्मठ आयुर्वेदाचार्य** की देखरेख में सम्पन्न होगा । प्रातः **4.00** बजे से दिनचर्या प्रारम्भ होकर रात्री **9.30** तक चलेगी । इस शिविर की विशेषता यह रहेगी कि.सायंकाल के समय शंका समाधान के साथ, विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए आयुर्वेदिक उपचार हेतु परामर्श भी किया जा सकता है । आर्य समाजी कार्यकर्ता व अधिकारी अपने साथ अपने परिवार के नई पीढ़ी के सदस्यों को और अपने मित्र व अन्य परिचित साथियों के परिवारों से भी व्यक्तियों को परिवार सहित इस शिविर में शामिल करने का भरसक प्रयत्न करें ता कि आज की पीढ़ी के परिवारों को वैदिक मान्यताओं और परम्पराओं में प्रशिक्षण दिया जा सके । परिवारों की संख्या सीमित रखी जा रही है अतः कार्यालय से संपर्क कर **अभी से अपने नाम परिवार सहित तुरंत सभा कार्यालय में दिनांक 5जनवरी 2016 तक अंकित करवा लें**

सम्पर्क :

१) सभा कर्यालय
श्री पं. प्रियदत्तजी शास्त्री
040-24756983, 040-24753827

२) **पंडित नरेन्द्र भवन**
श्री श्रीनिवास जी
040-66758707

भवदीय

श्री हरिकिशन वेदालंकारजी
मंत्री सभा
मोबाईल : **9703066001**

श्री विट्ठलराव आर्यजी
प्रधान सभा
मोबाईल : **9849560691**

ఉ.సం.404245/2015

తేది 15-11-2015

ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో

సకుటుంబ వైదిక ప్రశిక్షణ సాధనా శిబిరము

తేది 7 జనవరి 2016 నుండి 10 జనవరి 2016 ఆదివారము వరకు

స్థానము : పండిత్ నరేంద్ర భవనము, రాజమొహల్లా, రామ్‌కోట్, హైదరాబాదు.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ఆధ్వర్యములో సకుటుంబ వైదిక సాధనా ప్రశిక్షణ శిబిరము ఆచార్య సోమదెవ్ శాస్త్రి ముంబాయి గారి ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించుటకు నిర్ణయించనైనది. ఈ శిబిరము గురువారము తేది 7వ జనవరి 2016 నుండి ఆదివారము 10వ జనవరి 2016 వరకు నిర్వహించబడును. శిబిరములో పాల్గొనువారు కుటుంబ సమేతముగా బుధవారము 6వ జనవరి 2016 సాయంత్రం వరకు పండిత్ నరేంద్ర భవనమునకు చేరుకోవలెను. జనవరి మాసంలో చలి వుంటుంది కనుక అవసరమైన దుస్తులు తీసుకొని రావలెను. మిగత ఏర్పాట్లన్నియు ఆర్యప్రతినిధి సభ వైపు నుండి చేయబడును. శిబిరములో పాలొను వారు ప్రతి వ్యక్తి రూ॥ 100/- సభ కార్యాలయంలో జమ చేయించి తమ తమ పేర్లను కుటుంబ సమేతంగా నమోదు చేసుకోవలెను.

ఈ శిబిరము, భారతదేశ గొప్ప విద్వాంసులైన ఆచార్య సోమదేవ్ శాస్త్రి గారి ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించబడుచున్నది. వీరి సానిధ్యంలో నిర్వహించబడు ఈ శిబిరములో రావూర్‌కేల ఒడిస్సా నుండి స్వామి సుధానంద్ సరస్వతి గారు, గురుకుల్ హాథరస్ నుండి ఆచార్యా పవిత్రా వేదాలంకార్ గారు మరియు ప్రసిద్ధ భజనోపదేశకులు మరియు ఆయుర్వేదాచార్య పండిత్ కైలాష్ ఖర్మర, కోల్‌కత్తా గారు పాల్గొనెదరు. ఉ॥ 4.00 గం॥ల నుండి ప్రారంభమయ్యే ఈ శిబిరము రాత్రి 9.30 గం॥ల వరకు జరుగును. ప్రశిక్షణతో పాటు ఈ శిబిరము యొక్క విశిష్టత ఏమనగా సాయంకాలం ప్రశ్నోత్తరాలు, సందేహ నివారణాలుతో పాటు ఆరోగ్య సంబంధమైన చర్చ, పరామర్శ మరియు ఉపచారము ఆచార్య కర్మట్ గారితో చేయబడును కావున తమరు తమరి పరిచితులు మరియు మిత్రుల కుటుంబాల నుండి కుటుంబ సమేతముగా శిబిరములో పాల్గొనవలెనని కోరుచున్నాము. మీ-మీ కుటుంబాలలోని నేటి కొత్త వంశజలను (న్యూ జనరేషన్‌ను) వైదిక ప్రశిక్షణ శిబిరములో పాల్గొనుటకు ప్రోత్సహించి వచ్చేటట్లు ప్రయత్నం చేయవలెను. కుటుంబాల సంఖ్యను పరిమితంగా ఉంచుటకు నిర్ణయించనైనది కావున వెంటనే కుటుంబ సమేతంగా తమ పేర్లను సభ కార్యాలయంలో నమోదు చేసుకోగలరని కోరుచున్నాము.

సంపర్కము :

1) సభ కార్యాలయము - పండిత్ శ్రీ ప్రియదత్త శాస్త్రి గారు, **040-24756983, 24753827**

2) పండిత్ నరేంద్ర భవనము - శ్రీ శ్రీనివాస్ గారు, **040-66758707**

భవదీయ

హరికిషన్ వేదాలంకార్
సభ మంత్రి
సెల్ - **9703066001**

విఠల్‌రావు ఆర్య
ప్రధాన్ సభ
సెల్ - **9849560691**

इन्द्रो विश्वस्य-हे जगदीश्वर ! आप विद्युत् के समान संसार के बीच प्रकाशमान हैं । आपके अनुग्रह से हमारे (द्विपदे) पुत्रादि के लिए और (चतुष्पदे) पश्वादि के लिए सुख हो ।

इस वेद मन्त्र के द्वारा परमेश्वर की स्तुति करके ग्रन्थकार स्वरचित शलोकों में याचना के स्वर में प्रभु से प्रार्थना करते हैं-

तनोतु-सर्वशक्तिमान् दयालु परमेश्वर गौ आदि समस्त प्राणियों की रक्षा के लिए हमें प्रेरित करे और इसके मार्ग में आनेवाली बाधाओं को दूर करे ।

जो भद्र पुरुप हृदय से गोसंरक्षण के कार्य में लगे हों वे धर्म में प्रवृत्ति के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाले सुख और आनन्द को प्राप्त करें । इसके विपरीत जो मूर्ख और क्रूर लोग हत्या-जैसा जधन्य पाप करते हैं वे कदापि उस सुख को प्राप्त न हों ।

धन्य लोग-सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास के आरम्भ में ग्रन्थकार ने स्वरचित एक श्लोक में 'धन्य' कहलानेवाले पुरुषों के गुणों का विवेचन करते हुए अन्त में लिखा है-

संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः ।।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार-

परहित सरिस धरम नहीं भाई । परपीड़ा सम नहीं अधमाई ।।

भर्तृहरि ने मनुष्यों में विभिन्न कोटियों का विवेचन इस प्रकार किया है-

एके स्तपुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये,

सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृताः स्वार्थाविरोधेन ये ।

ते२मी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,

ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ।।

भावार्थ-संसार में वे लोग सत्पुरुष (उत्तम कोटि के मनुष्य) हैं जो अपने स्वार्थ को तिलांजलि देकर भी दूसरों का भला करते हैं । वे सामान्य (मध्यम कोटि के) मनुष्य हैं जो, अपना काम न बिगाड़ते हुए दूसरों का कार्य सिद्ध करते हैं । वे राक्षस (अधम कोटि के लोग) हैं जो अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरों का काम बिगाड़ते हैं, परन्तु जो लोग विना किसी स्वार्थ के व्यर्थ ही दूसरों के हित

गौ

की हानि करते हैं, उन्हें किस नाम से पुकारा जाए, यह हम नहीं जानते, क्योंकि वे राक्षसों से भी गये-बीते महानीच हैं ।

भर्तृहरि ने यहाँ अपने समय के चार प्रकार के लोगों का ही उल्लेख किया है । वर्त्तमान में पाँचवीं कोटि के लोग भी मिलते हैं-वे जो अपनी हानि करके भी दूसरों की हानि करने में प्रसन्न होते हैं । ऐसे लोग अपनी नाक कटाकर दूसरे का अपशकुन करने में संकोच नहीं करते अथवा यदि पड़ोसी की दोनों आँखें फूट जाएँ तो अपनी एक आँख फुड़वाने को तैयार हो जाएँगे ।

सुख-दुःख का अनुभव-जीवात्मा का लक्षण करते हुए न्यायदर्शन में लिखा है-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोः लिङ्गमिति ।।

- १।१।१०

अर्थात् जिसमें राग, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान गुण हों वह जीवात्मो है । इसके साथ यह भी सत्य है कि 'दुःखादुद्विजते लोकः सर्वस्य सुखमीप्सितम्'-प्राणिमात्र सुख चाहता और दुःख से दूर भागता है । इसलिए महाबारत में कहा है-''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''-तनिक-सा काँटा चुभने पर कितनी पीड़ा होती है, यह जानते हुए भी किसी के गलो पर छुरी फेरना महापाप नहीं तो क्या है ? और इतना बड़ा पाप मात्र जिह्वा के स्वाद के लिए करनेवाला 'मनुष्य' पद का अधिकारी कैसे हो सकता है-

एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः
प्राणैर्विमुच्यते ।

मरनेवाले की जान चली गई और खानेवाले को स्वाद नहीं आया, क्योंकि उसमें मिर्च-मसाला कम था । इसीलिए ग्रन्थकार ने लिखा है- 'विना किसी अपराध के किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोपण करना, यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे ।'

भूल सुधार-ग्रन्थकार ने कहीं भी अपने को निर्भ्रान्त नहीं माना है ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।

इसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ।।

इसलिए उन्होंने ऐसे स्थलों में अपेक्षित सुधार की छूट दे दी है, परन्तु इस कार्य में अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है

श्वेतक्रान्ति-हरित क्रान्ति-'दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि-गौ और कृषि दोनों का चोली-दामन का सम्बन्ध है । इन्हीं को अब श्वेत क्रान्ति (White revolution) और हरित क्रान्ति (Green revolution) का नाम दिया गया है । ग्रन्थकार ऋषि होने से क्रान्तदर्शी थे । इन दोनों को लक्ष्य करके ही ग्रन्थकार ने भारत सरकार की तरह 'गोसंबर्द्धन समिति' न बनाकर 'गोकृष्यादिरक्षिणीसभा' की स्थापना का विचार दिया था ।

अथ गोकरुणानिधिः

प्रारभ्यमाण ग्रन्थ के नामनिर्देश में 'अर्थ' पद का प्रयोग प्राचीन काल से चला आता है । भारतीय साहित्य में इसके प्रयोग को मांगलिक माना जाता है । साधारणतया 'अथ' का अर्थ 'प्रारम्भ करना' माना जाता है, पर प्राचीन परम्परा उच्चारणमात्र से इसे मांगलिक मानती आई है । अज्ञातकाल से ही गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा एक श्लोक चला आता है-

ओङ्कारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ

कतिपय विद्वानों का मत है कि मङ्गलाचरण की प्रथा मध्यकालिक आचार्यों से चली है, प्राचीन आर्यों मे ऐसी मान्यता नहीं रही, परन्तु ग्रन्थकार इससे सहमत नहीं हैं । अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को आरम्भ करते हुए उन्होंने चालू प्रथा का पूरी तरह पालन किया है । इतना ही नहीं, समुल्लास के अन्त में वैदिक दृष्टि के अनुसार इसका विवेचन भी प्रस्तुत किया है । मंगलाचरण की पौराणिक व तान्त्रिक प्रथा अमान्य है, किन्तु ग्रन्थकार ने अपने सभी ग्रन्थों में वैदिक मान्यता को बनाए रक्खा है ।

मध्यकालिक आचार्यों ने ग्रन्थारम्भ में मंगलाचरण का प्रयोजन विघ्न-बाधाओं का नाश माना है, पर गर्न्थकार इससे सहमत प्रतीत नहीं होते । सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास के अन्तिम भाग में सांख्यदर्शन का सूत्र उद्धृत कर उन्होंने कहा है- ''मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फल- दर्शनात् श्रुतितश्चेति'' ५ । १ अर्थात् ऐसा आचरण जो न्याय,

पक्षपातरहित सत्य तथा वेदोक्त ईश्वर की आज्ञानुसार यथावत् सर्वत्र और सदा अनुष्ठान में आवे, उसी को मङ्गलाचरण कहना चाहिए। विघ्न-बाधाओं को दूर हटाते हुए किसी ग्रन्थ की सम्पूर्णता एवं प्रारम्भ किये हुए किसी कार्य की निर्बाध सम्पन्नता ग्रन्थरचना वा कार्य करने वाले व्यक्ति के ताद्विषयक विशेष ज्ञान, धैर्य, उत्साह तथा अनवरत परिश्रम पर निर्भर करती है। प्रत्येक कार्य में अनेक प्रकार की विघ्न-बाधाएं सम्भव हैं। ऐसी बाधाओं के प्रतीकार भिन्न-भिन्न हिते हैं। केवल मङ्गलाचरण उनका प्रतीकार नहीं है। इसलिए मङ्गलाचरणं की वास्तविकता को समझकर ही उसकी उपादेयता पर ध्यान देना उचित व उपयुक्त होगा।

गोकृष्यादिरक्षिणीसभा

प्रथम बार संवत् १९३७ के अन्त में प्रकाशित गोकरुणानिधि के दो भाग हैं। प्रथम भाग में गौ आदि पशुओं को मारकर खाने की अपेक्षा उनकी रक्षा करके उनके घी-दूध द्वारा अधिक लाभ होने का विवरण प्रस्तुत किया गया है और मांसाहार से होने वाली हानियों का विवेचन करते हुए निरामिप भोजन के महत्त्व को दर्शाया गया है। दूसरे भाग में गवादि पशुओं की रक्षा के लिए स्थापित की जानेवाली गोरक्षिणी सभा के नियमोपनियम दिये गये हैं। प्रायः प्रकाशक गोकरुणानिधि पुस्तक के इस भाग को अनावश्यक समझकर अथवा प्रथम भाग को अधिक महत्त्वपूर्ण मानकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं। यह ऋषि के अभिप्राय के विरुद्ध है। अन्तथ- गौ और कृषि दोनों अन्योन्याश्रित हैं। इसलिए ऋषि ने सभा के नाम की व्याख्या करते हुए स्पष्ट लिखा है कि "इस सभा का नाम 'गोकृष्यादिरक्षिणिसभा' इसलिए रखा है, जिससे गवादि पशु और कृष्यादि कर्मों की रक्षा और वृद्धि होकर सब प्रकार के उत्तम सुख मनुष्यादि प्राणियों को प्राप्त होते हैं।" भारत के संविधान की धारा ४९ की रचना लगभग इन्हीं शब्दों में की गई है।

वहाँ लिखा है-

Organisation of agriculture and animal husbandary-"The State shall endeavour to organise agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines and shall in particular, take steps for preserving and improving the breeds, and prohibiting the slaughtering of cows and calves and other milch and draught cattle."

अर्थात् कृषि और पशुपालन (गोकृष्यादि) का संगठन (सभा)-राज्य कृषि और पशुपालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्राणालियों से संगठित करने का प्रयास करेगा और विशिष्टतया गायों और बछड़ों तथा अन्य दुधारू और वाहक पशुओं की नस्लों के परिरक्षण और सुधार के लिए और उनके वध का प्रतिपेध करने के लिए कदम उठाएगा।

इन्द्रियों का प्रयोजन-आत्मा को कर्मफल का उपभोग करने के लिए बाह्य जगत् से सम्पर्क करना पड़ता है, क्योंकि विषयरूप भोग-सामग्री बाह्य जगत् में ही उपलब्ध है, आत्मा शरीर के भीतर रहता है। बाहर उसकी गति नहीं। इसलिए उसे बाह्य जगत् से सम्पर्क करने के लिए ऐसे साधन की आवश्यकता है जो आत्मा और शरीर दोनों के बीच माध्यम का कार्य कर सके। इसी मध्यस्थ या सम्पर्क अधिकारी को 'मन' कहते हैं, परन्तु मन भी शरीर से बाहर नहीं जा सकता। कार्यालय के भीतर बैठे-बैठे कार्य-सम्पादन के लिए उसे भी ऐसे सहायकों की आवश्यकता होती है, जो बहिर्मुख होने के कारण बाह्य जगत् से सीधा सम्बन्ध रखते हों, इन्हीं को इन्द्रियाँ कहते हैं। इनका स्वामी होने से आत्मा 'इन्द्र' कहलाता है। प्रत्येक इन्द्रिय का उसके लिए नियत कार्य में लगाना ही उचित है। वेद का आदेश है-"

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः.।"

ऐसा न करके आँखों को फोड़ देना कहाँ कि बुद्धिमत्ता है। पूर्वकृत कर्मों का फल भोगने और वर्तमान में पुरुषार्थ द्वारा मोक्ष का अधिकारी बनने के लिए शरीर मिलता है। उससे इस प्रयोजन की सिद्धि न करके आत्महत्या करके इसे नप्ट करनेवाले को क्या कहेंगे ? इसी प्रकार संसार में दूध प्राप्त करने और कृषि आदि में सहायक होने के लिए परमेश्वर ने गाय, बैल और भैंस आदि पशुओं की सृष्टि की है। उनका इस रूप में उपयोग न करके उनकी हत्या करना स्वयं अपने हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

ग्रन्थकार ने सत्यार्थप्रकाश में भी इस विषय का विवेचन किया है। गाय और बैल से प्राप्त होनेवाले दूध और अन्न के हिसाब में सत्यार्थप्रकाश और गोकरुणानिधि की संख्याओं में कुछ भेद है। वह भेद सामान्यभूत अनुमानिक गणना के कारण है। सत्यार्थप्रकाश में सर्वयोग ४७५५०० लिखा है।

गाय सर्वोत्तम क्यों ?

१. आधुनिक वैज्ञानिक इस बात पर चकित हैं कि प्रत्येक पशु के मांस वा दूध में संखिया का अंश पाया जाता है। गाय के मांस में भी संखिया का अंश पाया जाता है, परन्तु उसके दूध में संखिया का अंश आज तक उपलब्ध नहीं हुआ। इससे भी गाय के दूध का और इस कारण गाय का वैशिष्टय प्रत्यक्ष सिद्ध है।

२. भैंस का दूध सफेद और गौ का दूध पीला होता है, इसलिए भैंस और गाय के दूध को क्रमशः चाँदी और सोना कहा जाता है। इसे प्रमाणित करने के लिए दोनों के दूध की गुणवत्ता के अन्तर को जानना आवश्यक है। पशु के गुण-दोषों का प्रभाव उसके दूध में देखा जा सकता है और इसे जानने के लिए उसकी सन्तान में अन्तर को देखना आवश्यक है।

३. गाय का तीन दिन का बछड़ा उछलता-कूदता चलता है, जबकि भैंस का पाड़ा तीस दिन का भी जड़-सा पड़ा रहतै है। इससे स्पष्ट है कि गाय का दूध पीने से स्फूर्ति आती है और भैंस का दूध पीने से आलस्य आता है।

४. बीस भैंसों के बीच में पाड़े को छोड़ा जाए तो वह सीधा अपनी माँ के पास नहीं पहुँचेगा, जबकि बछड़ा ५० गायों के बीच में छोड़ा जाने पर भी सीधा अपनी माँ के पास पहुँच जाएगा। इससे गाय का दूध पीने से बौद्धिक स्तर की उत्कृष्टा प्रत्यक्ष सिद्ध है। पाड़े में तो दूर से अपनी माँ को पहचानने तक की भी बुद्धि नहीं होती।

५. गाय के बछड़ों के नाम रख दिये जाएँ तो वे अपना नाम पुकारे जाते ही दौड़कर पुकारनेवाले के पास पहुँच जाते हैं, परन्तु भैंस और उसके पाड़े में अपने नाम को सुनकर कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी, क्योंकि उनमें नाम को पहचानने की क्षमता का विकास नहीं होता।

६. राजस्थान के बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलों में एक गाय के गले में

घण्टी बाँध देते हैं। हर ग्वाले की गाएँ गण्टीवाली गाय के साथ ही मीलों का चक्कर काटकर नियत समय पर घर वापस पहुँच जाती हैं। एक भी गाय कम न होगी, न बढ़ेगी, परन्तु केवल दस भैंसों को घण्टी बाँधकर छोड़ा जाएगा तो भी एक साथ नहीं आएँगी। देर तक इधर-उधर भटककर आगे-पीछे आएँगी--न समय का ज्ञान, न स्थान की पहचान और न समूह की जानकारी।

७. गाय का दूध तो उत्तम गुणों की खान है ही, उसका गोबर और मूत्र भी भैंस की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ है। गाय के गोबर की खाद खती में तीन साल तक काम देती है, पर भैंस के गोबर की खाद दो साल बाद बेकार हो जाती है। गाय के गोबर में एक बड़ा गुण यह है कि वह अपने-आपमें कीटनाशक है। आस्ट्रेलिया में फसल पर गोमूत्र स्प्रे करके कीटनाशक दवा का काम लिया जाता है।

८. गोमूत्र महान् ओषधि है। आयुर्वेद शास्त्र में गोमूत्र से अथवा उसके योग से तैयार ओषधियों से पचासों रोगों की चिकित्सा का उल्लेख हुआ है।

९. भारत में आज भी ७५ प्रतिशत खेती बैलों से हो रही है। जैसी और जितनी उत्तम खेती गो-जायों से हो सकती है वैसी और उतनी उत्तम खेती भैंसे नहीं कर सकते।

१०. देसी गाय कड़ी धूप सहन कर सकती है। सूरज की किरण सहन करने से दूध नीरोग होता है, अतः वह अधिक स्वास्थ्यप्रद होता है। भैंस तथा संकर गाय कड़ी धूप सहन नहीं कर सकते।

११. दिनभर कड़ी धूप में बैल काम कर सकता है। भैंसा कड़ी धूप में देर तक नहीं टिक सकता।

१२. भैंसे की गाड़ी नाले में फँस जाए तो भैंसे बैठ जाएँगे पर बैल निकाल ले-जाएँगे।

१३. भैंस का ही नहीं, संकर गाय का नर भी खेती जोतने में अधिक काम नहीं देता। इसके लिए देसी गाय की नस्ल ही उपयोगी होती है।

१४. भैंस के घी के कण कड़े होते हैं जो आसानी से नहीं पचते। इसलिए वे बाहर निकल जाते हैं। भैंस के दूध को गरम करने से उसके विटामिन नष्ट हो जाते हैं। गाय के दूध में ऐसा नहीं होता। गाय के दूध के कण सूक्ष्म और सुपाच्य होते हैं, अतः वे मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियों में पहुँचकर मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते हैं।

१५. इंटरनेशनल कार्डियोलोजी कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ० शान्तिलाल शाह के मत में भैंस के दूध में लाँग चेन फैट होती है, जो शरीर की नसों में जम जाती है और हार्ट-अटैक का कारण बनती है। हृदयरोगियों के लिए गाय का दूध विशेषरूप से उपयोगी है।

१६. गाय के दूध में क्युरोटिन नामक पीला पदार्थ रहता है जो आँखों की ज्योति बढ़ाता है।

१७. भारत का दुर्भाग्य है कि उसने अपने ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदर्शित मार्ग छोड़ दिया, परन्तु भारतेतर देशों के लोग उसी का अनुसरण करके लाभान्वित हो रहे हैं। संसार के सभी विकसित देशों-इंगलैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, जापान, फ्रांस, रूस आदि में सर्वत्र गाय के ही घी-दूध का प्रयोग होता है। कोई भी भैंस को नहीं रखता। एक सौ पचास वर्ष में अंग्रेजी राज में लाखों की संख्या में गाय और साँड विदेशों में गये, भैंस एक भी नहीं। भैंस वहाँ के अजायबघरों या चिड़ियाघरों में प्रदर्शनार्थ रक्खी जाती है।

१८. गाय का दूध जीवन-शक्ति प्रदान करनेवाले द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है।

-चरक सूत्रस्थान २।१८

१९. गाय का दूध पथ्य, रसायन, बलवर्धक, हृदय के लिए हितकर, मेधाबुद्धि को बढ़ानेवाला, आयुप्रद, पुंसत्वकारक, वात तथा रक्तपित के विकार को नष्ट करनेवाला होता है। सफेद गाय का दूध वातनाशक, काली गाय का दूध पित्तशामक तथा लाल गाय का दूध कफ नाशक होता है।

-धन्वन्तरि निघण्टु ७०।१५१, १५२

२०. सदैव गाय का दूध सेवन करने से सब प्रकार के रोग तथा बुढ़ापा नष्ट होता है। काली गाय का दूध अधिक गुणवाला होता है।

-भावप्रकाश निघण्टु दुग्धवर्ग ९-१०

२१. दही-गाय का दही, विशेष मीठा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, हृदय को प्रिय, पुष्टिकारक और वातनाशक है। गाय का दही सर्वोत्तम है।

-दही, दधिवर्ग १०

२२. घी - गाय का घी विशेषकर नेत्रों को हितकारी, अग्निप्रदीपक, पाक में मधुर, शीतल, वात-पित्त-कफ़ नाशक, बलवर्धक, पवित्र, आयुवर्धक, रसायन, सुगन्धयुक्त, सुन्दर और सम्पूर्ण घृतों में उत्तम है।

-वही, घृतवर्ग ४-६

२३. मक्खन-गाय का मक्खन हितकारी, वृष्य, रंग को निखारनेवाला, बलकारी, अग्निप्रदीपक, ग्राही, वात-पित्त-रक्तविकार, क्षय, बवासीर, लकवा तथा खाँसी को नष्ट करनेवाला है। यह मक्खन बालकों और वृद्धों को हितकारी है। बच्चों के लिए तो अमृत-तुल्य है।

-वही, नवनीतवर्ग १-२

२४. तक्र-तक्र का सेवन करनेवाले मनुष्य कदापि रोगी नहीं होते। तक्र सेवन से नष्ट रोग पुनः नहीं उभरते। जैसे देवताओं के लिए अमृत होता है, वैसे ही पृथिवी के मनुष्यों के लिए तक्र होता है।

-वही, तक्र वर्ग-७

लोक में प्रसिद्ध है- **तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्**।

तक्र या छाछ के पाँच भेद हैं-

१. घोल-दही को बिना पानी डाले, मलाई समेत मथने पर जो द्रव्य तैयार होता है, उसे 'घोलन कहते हैं।

२. मथित-दही के ऊपर की मलाई उतारकर बिना पानी डाले बिलोया हुआ 'मथित' कहाता है।

३. मट्ठा-जिसे एक चौथाई भाग पानी डालकर मथा जाए वह तक्र अथवा मट्ठा कहलाता है।

४. उदश्वित्-आधा पानी डालकर मथा

'मुक्त दयानन्द मोक्ष में आर्यसमाज की दुर्दशा से दुःखी व संतप्त'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द का अजमेर में दीपावली, सन् 1883 को देहावसान हुआ था। **वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के बाद हमें पूरी सम्भावना लगती है कि उन्हें ईश्वर की कष्पा से मोक्ष प्राप्त हुआ होगा।** यदि किसी विद्वान को इसमें संशय हो कि महर्षि दयानन्द जी को मोक्ष नहीं मिला होगा, तो हमें लगता है कि फिर किसी भी जीवात्मा को मोक्ष नहीं मिल सकता। इसका कारण है कि महर्षि दयानन्द जी में जो वेदज्ञान की पराकाष्ठा व गुण–कर्म–स्वभाव की श्रेष्ठता व आचरण था उससे अधिक होने की हम कल्पना ही नहीं कर सकते। उनके जीवन में कोई नकारात्मक बात दषष्टिगोचर होती ही नहीं है। अतः उनको मोक्ष मिलना निश्चित होता है। मोक्ष पर विचार किया जाये तो मोक्ष में ईश्वर मुक्त जीवात्मा को अनेक प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न करता है जिससे जीव समूचे ब्रह्माण्ड में स्वेच्छापूर्वक विचरता है। यदि वह चाहे तो, अजर व अमर होने से, सूर्य पर भी जा सकता है और ब्रह्माण्ड के अन्य सभी लोक लोकान्तरों में भी। विचार करने पर हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द मोक्ष में खाली तो बैठे नहीं होंगे, यत्र तत्र अवश्य जाते होंगे। उनकी अवश्य इच्छा होती होगी कि आर्यसमाज के बारे में यथार्थ जानकारी प्राप्त की जाये। आर्यसमाज की उन्नति की उन्हें निश्चय ही अब भी चिन्ता होती होगी। उन्होंने आर्यसमाज को अपने रक्त से सिंचित किया था। मोक्ष में उन्हें वह सब कुछ स्मरण होगा जो उन्होंने पषथिवी लोक में किया था। अपने पूर्व जन्मों का भी उन्हें अवश्य ही ज्ञान होगा। अपने जीवन (1825–1883) के बारे में जब वह विचार करते होंगे तो वह पषथिवी पर आकर टंकारा, अजमेर सहित जोधपुर, उदयपुर व अन्य स्थानों पर जहां–जहां वह अपने जीवन काल में घूमे थे, जाते होंगे। हो सकता है कि स्वामी दयानन्द जी के विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी को भी मोक्ष प्राप्त हुआ होगा और दोनों की परस्पर भेंट हुआ करती होगी। दोनों गुरु शिष्यों ने मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार व आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की होगी और वर्तमान अवस्था से वह अवश्य खिन्न व दुःखी हुए होंगे। आज के हिन्दुओं व आर्यसमाजियों का वैदिक धर्म के प्रति जो उपेक्षा भाव है और आर्यसमाज के संगठन की जो दुर्दशा है, उसको देखकर वह दोनों अवश्य खून के आंसू पीते होंगे। हमें यह भी अनुमान होता है कि वह मोक्ष में ईश्वर से प्राप्त सभी प्रकार की शक्तियों का उपयोग करते हुए आर्यसमाज के वर्तमान बड़े–छोटे, ऊंचे व नीचे अधिकारियों और सदस्यों के पास भी आते–जाते होंगे और उनके कार्यों व गुण–कर्म–स्वभाव को देखकर हर्ष व शोक करते होगें। हमारे जो अधिकारी आज पदों पर बैठे हैं और उसके साथ न्याय नहीं कर रहे हैं, मुकदमों, गुटों व अन्य प्रकार की तिगड़मों से अपने पद व अधिकारों को लेकर परस्पर संघर्ष कर रहे हैं, उन्हें देखकर अवश्य ही दुःखी होते होंगे। यदि गुरु विरजानन्द जी और स्वामी दयानन्द जी के वश में होता तो वह अवश्य ही ईश्वर को भारत की धरती पर जन्म देने के लिए कहते जिससे कि वह पषथिवी पर आकर वैदिक धर्म के प्रचार के निमित्त आर्यसमाज का सुधार कर वेद प्रचार के अधूरे कार्य को पूरा सकें। ईश्वर ने उन्हें बता दिया होगा कि मोक्ष अवधि पूरी होने से पूर्व उन्हें जन्म देना सम्भव नहीं है। इससे व्यवस्था भंग होगी, अतः ऐसा किया जाना उचित व सम्भव नहीं है। हमने विचार किया है और हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द जी व गुरु विरजानन्द जी के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महाशय राजपाल, पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी आदि अनेक महान पुरुषों की आत्मायें मोक्ष में हो सकती हैं और वह अवश्य ही भारत में आकर वैदिक धर्म और आर्यसमाज की स्थिति व आर्यसमाज के अनुयायियों के आचरण को देख कर दुःखी होती होंगी।

हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि हमने विचार करने पर उपरोक्त तथ्यों को सही पाया और पाठकों के विचारार्थ लिख दिया। आर्यसमाज के महर्षि दयानन्द के अनुयायी कहलाने व मानने वाले बन्धुओं को इस पर संजीदगी से विचार करना चाहिये और अपने आचरण में अपेक्षित सुधार करना चाहिये। हम समझते हैं कि जब हम अपने सभी स्वार्थों को पष्थक रखकर विचार करेंगे तो हमें निश्चय ही अपने कर्तव्य का बोध होगा। पद व सम्मान की लोकैषणा, वित्तैषणा व पुत्रैषणा आदि अनित्य हैं जो कि कुछ काल बाद ही समाप्त हो जायेंगी परन्तु धर्म व वैदिक मत का पालन व आचरण हमें भावी जन्मों में भी सहायक होता है जो कि तर्कसिद्ध सिद्धान्त हैं। अतः हमें सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग करते हुए अपनी जीवात्मा के दूरगामी हित को ही महत्व देना है। हम विवार कर अपने कर्तव्यों का निश्चय करें। गुरु विरजानन्द जी और महर्षि दयानन्द जी की मोक्ष में विचरण कर रही आत्मा जो चाहने पर हमारे पास आकर हमारे आचरण व विचारों को जान सकती है, इसका ध्यान कर हम अपने कर्तव्य का निर्धारण करें और उसी पर चलकर अपने जीवन को देश व समाज के लिए समर्पित कर दें।

अथ गोकरुणानिधिः

अथ समीक्षा-प्रकरणम्

भूमिका

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥
-य० अ० ३६ । मं० ८ ॥

तनोतु सर्वेश्वर उत्तमम्बलं गवादिरक्षं विविधं दयेरितः ।
अशेषविघ्नानि निहत्य नः प्रभुः सहायकारी विदधातु गोहितम् ॥१॥
ये गोसुखं सम्यगुशन्ति धीरास्ते धर्म्मजं सौख्यमथाददन्ते ।
क्रूरा नराः पापरता न यन्ति प्रज्ञाविहीनाः पशुहिंसकास्तत् ॥२॥

वे धर्मात्मा विद्वान् लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब संसार को सुख पहुँचाते हैं और शोक है उनपर जोकि इनके विरुद्ध, स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिए वर्तमान हैं । पूजनीय जन वे हैं कि जो अपनी हानि होती हो तो भी सबके हित के करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते हैं ।

ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो ? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह दुःख और सुख का अनुभव न करे ? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है तो बिना अपराध के किसी प्राणी का प्राणवियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे ? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें ।

इस ग्रन्थ में जो कुछ अधिक, न्यून वा अयुक्त लेख हुआ हो उसको बुद्धिमान् लोग इस ग्रन्थ के तात्पर्य के अनुकूल कर लेवें । धार्मिक विद्वानों की यही योग्यता है कि वक्ता के वचन और ग्रन्थकर्ता के अभिप्राय के अनुसार ही समझ लेते हैं । यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है, जिससे गो-आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाये जावें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सबको सुख बढ़ता रहे । परमात्मा कृपा करें कि यह अभीष्ट शीघ्र सिद्ध हो ।

इस ग्रन्थ में तीन प्रकरण हैं-एक समीक्षा, दूसरा नियम और तीसरा उनियम । इनको ध्यान दे पक्षपात छोड़ विचारके राजा तथा प्रजा यथावत् उपयोग में लावें कि जिससे दोनों के लिए सुख बढ़ता ही रहे । ॥ इति भूमिका ॥

गोकृष्यादिरक्षिणीसभा

इस सभा का नाम 'गोकृष्यादिरक्षिणी' इसलिए रक्खा है जिससे गवादि पशु और कृष्यादि कर्मों की रक्षा और वृद्धि होकर सब प्रकार के उत्तम सुख मनुष्यादि प्राणियों को प्राप्त होते हैं और इसके बिना निम्नलिखित सुख कभी नहीं प्राप्त हो सकते ।

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो-जो पदार्थ बनाये हैं, वे निष्प्रयोजन नहीं, किन्तु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोज़न के लिए रची है । इसलिए उनसे वे ही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है । देखिए ! जिस लिए यह नेत्र बनाया है, इससे वही कार्य लेना सबको उचित होता है न कि उससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच ही में वह नष्ट कर दिया जावे । क्या जिन-जिन प्रयोजनों के लिए परमात्मा ने जो जो पदार्थ बनाये हैं, उन-उनसे वे-वे प्रयोजन न लेकर उनको प्रथम ही विनष्ट कर देना सत्पुरुषों के विचार में बुरा कर्म नहीं है ? पक्षपात छोड़कर देखिए, गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्मों से सब संसार को असंख्य सुख होते हैं वा नहीं ? जैसे दो और दो चार, वैसे ही सत्यविद्या से जो-जो विषय जाने जाते हैं वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते ।

जो एक गाय न्यून-से-न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर, तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शङ्का नहीं । इस हिसाब से एक मास में सवा आठ मन दूध होता है । एक गाय कम से कम ६ महीने और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती हैं, तो दोनों का मध्यभाग प्रत्येक गाय के दूध देने में बारह महीने होते हैं । इस हिसाब से बारह महीनों का दूध निन्नानवे मन होता है । इतने दूध को औंटाकर प्रति सेर में छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डालकर खीर बना खावें, तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है, क्योंकि यह भी एक मध्यभाग की गिनती है, अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खाएगा और कोई न्यून, इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से १९८० एक हज़ार नवसौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं । गाय न्यून-से-न्यून ८ और अधिक-से-अधिक १८ बार ब्याती हैं, इसका मध्यभाग तेरह बार आया, तो २५,७४० पच्चीस हज़ार सातसौ चालीस मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते है ।

इस गाय के एक पीढ़ी में छह बछियाँ और सात बछड़े हुए । इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे । उन छह बछियाओं के दूधमात्र से उक्त प्रकार १,५४,४४० एक लाख चौवन हज़ार चारसौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता हैं । अब रहे छह बैल, उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में दोसौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है । इस प्रकार तीन जोड़ी छह सौ मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं और उनके कार्य का मध्यभाग आठ वर्ष है । इस हिसाब से ४८०० मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीन जोड़ी की है । इतने (४८०० मन) अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिनें, तो २,५६,००- दो लाख छप्पन हज़ार मनुष्यों

का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि ४,१०,४४० चार लाख दश हज़ार चारसौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छह गाय की पीढ़ी पर पीढ़ीयों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं ?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध कुछ अधिक और वैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुँचता है, तथापि जितना गाय के दूध और बैलों के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है उतना भैंसियों के दूध और भैंसों से नहीं, क्योंकि जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्द्धक आदि गुण गाय के दूध में और लाभ बैलों से होते हैं, उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि से नहीं हो सकते। इसलिए आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है।

और ऊँटनी का दूध गाय और भैंस के दूध से भी अधिक होता है, तो भी इनका दूध गाय के सदृश नहीं। ऊँट और ऊँटनी के गुण भार उठाकर शीघ्र पहुँचाने के लिए प्रशंसनीय हैं।

अब एक बकरी कम-से-कम एक और अधिक-से-अधिक पाँच सेर दूध देती है, इसका मध्यभाग प्रत्येक बकरी से ३ सेर दूध होता है और न्यून-से-न्यून तीन महीने और अधिक से अधिक पाँच महीने तक दूध देती है, तो प्रत्येक बकरी के दूध देने में मध्यभाग चार महीने हुए। वह एक मास में २। सवा दो मन और चार मास में ९ नव मन होता है। पूर्वोक्त प्रकारानुसार इस दूध से १८० एक सौ अस्सी मनुष्यों की तृप्ति होती है और एक बकरी एक वर्ष में दो बार ब्याती है। इस हिसाब से एक वर्ष में एक बकरी के दूध के एक बार भोजन से ३६० तीनसौ साठ मनुष्यों की तृप्ति होती है। कोई बकरी न्यून-से-न्यून चार वर्ष और कोई अधिक-से-अधिक ८ आट वर्ष तक ब्याती है, इसका मध्य भाग छह वर्ष हुआ, तो जन्मभर के दूध से २, १६० दो हज़ार एक सौ साठ मनुष्यों का एक बार के भोजन से पालन होता है।

अब उसके बच्चा-बच्ची मध्यभाग से २४ चौबीस हुए, क्योंकि कोई न्यून-से-न्यून एक और कोई अधिक-से-अधिक तीन बच्चों से ब्याती है। उनमें से दो का अलपमृत्यु समझो, रहे २२ बाईस, उमें से १२ बकरियों के दूध से २५,१२० पच्चीस हज़ार नवसौ बीस मनुष्यों का एक दिन पालन होता है। उसकी पीढ़ी-पर-पीढ़ी के हिसाब लगाने से असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और बकरे भी बोझ उठाने आदि प्रयोजनों में आते हैं और बकरा-बकरी और भेड़-भेड़ी के ऊन के वस्त्रों से मनुष्यों को बड़े-बड़े सुख-लाभ होते हैं। यद्यपि भेड़ी का दूध बकरी के दूध से कुछ कम होता है, तथापि बकरी के दूध से उसके दूध में बल और घृत अधिक होता है। इसी प्रकार अन्य दूध देनेवाले पशुओं के दूध से भी अनेक प्रकार के सुख-लाभ होते हैं।

जैसे ऊँट-ऊँटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़े-घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा, मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी अनेक उपकार होते हैं। जो पुरुष हरिण और सिंह आदि पशु और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो ले-सकते हैं, परन्तु सवका पालन उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगा। वर्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। दो ही प्रकार से मनुष्य आदि की प्राणरक्षा, जीवन, सुख, विद्या, बल और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है-एक अन्नपान, दूसरी आच्छादन। इनमें से प्रथम के बिना मनुष्यादि का सर्वथा प्रलय और दूसरे के बिना अनेक प्रकार की पीड़ा होती है।

देखिए, जो पशु निःसार घास, तृण, पत्ते, फल-फूल आदि खायें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल-गाड़ी में चलके अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर सबके बुद्धि, बल, पराक्रम को बढ़ाके नीरोगता करें, पुत्र-पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहाँ बाँधे वहाँ बँधे रहें, जिधर चलायें उधर चलें, जहाँ से हटावें वहाँ से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु व मारनेवाले को देखें अपनी रक्षा के लिए पालना करनेवाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा। जिनके मरे पर चमड़ा भी कंटक आदि से रक्षा करे, जङ्गल में चरके अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन-मन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिए है, इत्यादि शुभगुणयुक्त, सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो अपना पेट भर, सव संसार की हानि करते हैं क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देनेवाले और पापीजन होंगे ?

इसीलिए यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि-'**यजमानस्य पशून् पाहि**' हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान, अर्थात् सबके सुख देनेवाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे और इसीलिए ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं और इनकी रक्षा में अन्न भी महंगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान-पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होती है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि भी विशेष होती है। उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है।

इससे यह ठीक है कि गो-आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तव दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु ७०० सात सौ वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध-घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य से भी नहीं मिल सकते, क्योंकि ७०० सात सौ वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारनेवाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़, मांस तक भी नहीं छोड़ते, तो '**नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्**' जब कारण का नाश कर दे तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे ? हे मांसाहारियो ! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ? हे परमेश्वर ! तू क्यों इन पशुओं पर

जोकि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता ? क्या उनपर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या उनके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है ? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता । क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया का प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता ? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें ।

अथ समीक्षायां हिंसक-रक्षक-संवाद

हिंसक-ईश्वर ने सब पशु आदि सृष्टि मनुष्य के लिए रची है और मनुष्य अपनी भक्ति के लिए । इसलिए मांस खाने में दोष नहीं हो सकता ।

रक्षक-भाई ! सुनो, तुम्हारे शरीर को जिस ईश्वर ने बनाया है क्या उसी ने पशु आदि के शरीर नहीं बनाये हैं ? जो तुम कहो कि पशु आदि हमारे खाने को बनाये हैं, तो हम कह सकते हैं कि हिंसक पशुओं के लिए तुमको उसने रचा है, क्योंकि जैसे तुम्हारा चित्त उनके मांस पर चलता है, वैसे ही सिंह, गृध्र आदि का चित्त भी तुम्हारे मांस खाने पर चलता है, तो उनके लिए तुम क्यों नहीं ?

हिंसक-देखो, ईश्वर ने पुरुषों के दाँत कैसे मांसाहारी पशुओं के समान बनाये हैं । इससे हम जानते हैं कि मनुष्यों को मांस खाना उचित है ।

रक्षक-जिन व्याघ्रादि पशुओं के दाँत के दृष्टान्त से अपना पक्ष सिद्ध किया चाहते हो, क्या तुम भी उनके तुल्य ही हो ? देखो, तुम्हारी मनुष्यजाति उनकी पशुजाति, तुम्हारे दो पग और उनके चार, तुम विद्या पढ़कर सत्यासत्य का विवेक कर सकते हो, वे नहीं ! और यह तुम्हारा दृष्टान्त भी युक्त नहीं, क्योंकि जो दाँत का दृष्टान्त लेते हो तो बन्दर के दाँतों का दृष्टान्त क्यों नहीं लेते ? देखो ! बन्दरों के दाँत सिंह और बिल्ली आदि के समान हैं और वे मांस नहीं खाते । मनुष्य और बन्दर की आकृति भी बहुत-सी मिलती है, जैसे मनुष्यों के हाथ, पग और नख आदि होते हैं, वैसे ही बन्दरों के भी हैं । इसलिए परमेश्वर ने मनुष्यों को दृष्टान्त से उपदेश किया है कि जैसे बन्दर मांस कभी नहीं खाते और फलादि खाकर निर्वाह करते हैं, वैसे तुम भी किया करो । जैसा बन्दरों का दृष्टान्त साङ्गोपाङ्ग मनुष्यों के साथ घटता है, वैसा अन्य किसी का नहीं । इसलिए मनुष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड़ देवें ।

हिंसक-देखो, जो मांसाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान् और जो मांस नहीं खाते हैं वे निर्बल होते हैं, इससे मांस खाना चाहिए

रक्षक-क्यों अल्प समझ की बातें मानकर कुछ भी विचार नहीं करते । देखो, सिंह मांस खाता और सुअर वा अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता, परन्तु जो सिंह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गिरे तो एक या दो को मारता और एक-दो गोली वा तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब ज्गली सुअर वा अरणा भैंसा जिस प्राणिसमुदाय में गिरता है, तब अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और गोली बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं गिरता और सिंह उससे डरके अलग सटक जाता है और वह सिंह से नहीं डरता ।

और जो प्रत्यक्ष दृष्टान्त देखना चाहो तो एक मांसाहारी का, एक दूध, घी और अन्नाहारी मथुरा के मल्ल चौबे से बाहुयुद्ध हो तो अनुमान है कि चौबा मांसाहारी को पटक उसकी छाती पर चढ़ ही बैठेगा । पुनः परीक्षा होगी कि किस-किसके खाने से बल न्यून और अधिक होता है । भला, तनिक विचार करो कि छिलकों के खाने से अधिक बल होता है अथवा रस जो सार है उसके खाने से ? मांस छिलके के समान और दूध, घी और रस सार के तुल्य हैं, इसको जो युक्तिपूर्वक खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है फिर मांस का खाना व्यर्थ और हानिकारक, अन्याय अधर्म और दुष्टकर्म क्यों नहीं ?

हिंसक-जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता, वहाँ वा आपत्काल में अथवा रोगनिवृत्ति के लिए मांस खाने में दोष नहीं होता ।

रक्षक-यह आपका कहना व्यर्थ है, क्योंकि जहाँ मनुष्य रहते हैं, वहाँ पृथिवी अवश्य होती है । जहाँ पृथिवी है वहाँ खेती वा फल, फूल आदि होते हैं और जहाँ कुछ भी नहीं होता वहाँ मनुष्य भी नहीं रह सकते और जहाँ उसर भूमि है, मिष्ट जल और फलाहारादि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है और आपत्काल में भी अन्य उपायों से निर्वाह कर सकते हैं, जैसे मांस न खानेवाले करते हैं और बिना मांस के रोगों का निवारण भी ओषधियों से यथावत् होता है, इसीलिए मांस खाना अच्छा नहीं ।

हिंसक-जो कोई भी मांस न खावे तो पशु इतने बढ़ जाएँ की पृथिवी पर भी न समावें और इसीलिए ईश्वर ने उनकी उत्पत्ति भी आधिक की है, तो मांस क्यों न खाना चाहिए ?

रक्षक-वाह ! वाह !! वाह !!! बुद्धि का विपर्यास आपको मांसाहार ही से हुआ होगा । देखो मनुष्य का मांस कोई नहीं खाता, पुनः क्यों न बढ़ गये और इनकी अधिक उत्पत्ति इसलिए है कि ऐक मनुष्य के पालन-व्यवहार में अनेक पशुओं की अपेक्षा है । इसलिए ईश्वर ने उनको अधिक उत्पन्न किया है ।

हिंसक-ये जितने प्रश्न-उत्तर किये वे सब व्यवहार-सम्बन्धी हैं, परन्तु पशुओं को मारके खाने में अधर्म तो नहीं होता और जो होता है तो तुमको होता होगा, क्योंकि तुम्हारे मत में निषेध है । इसलिए तुम मत खाओ और हम खावें, क्योंकि हमारे मत में मांस खाना अधर्म नहीं है ।

रक्षक-हम तुमसे पूछते हैं कि धर्म और अधर्म व्यवहार ही में होते हैं वा अन्यत्र ? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्मादर्म होते हैं । जिस-जिस व्यवहार से दूसरों की हानि हो वह 'अधर्म' और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो, वह-वह 'धर्म' कहता है । तो लाखों के सुख-लाभकारक पशुओं का नाश करना अधर्म और उनकी रक्षा से लाखों को सुख पहुँचाना धर्म क्यों नहीं मानते ? देखो, चोरी-जारी आदि कर्म इसीलिए अधर्म है कि इनसे दूसरे की हानि होती है । नहीं तो जो-जो प्रयोजन धनादि से उनके स्वामी सिद्ध करते हैं, वे ही प्रयोजन उन चोरादि के भी सिद्ध होते हैं । इसलिए यह निश्चित है कि जो-जो कर्म जगत् में हानिकारक हैं वे-वे 'अधर्म' और जो-जो परोपकारक हैं वे-वे 'धर्म' कहाते हैं ।

जब एक आदमी को हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप में गिनते हो, तो गवादि पशुओं को मारके बहुतों की हानि करना महापाप क्यों नहीं ? देखो, मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं, किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करने ही में सदा रहते हैं । जब मांसाहारी किसी पुष्ट पशु को देखता

है तभी उसकी इच्छा होती है कि इसमें मांस अधिक हैं, मारके खाऊँ तो अच्छा हो और जब मांस का न खानेवाला उसको देखता है तो प्रसन्न होता है कि यह पशु आनन्द में है । जैसे सिंह आदि मांसाहारी पशु किसी का उपकार तो नहीं करते, किन्तु अपने स्वार्थ के लिए दूसरे का प्राण भी ले मांस खाकर अतिप्रसन्न होते हैं, वैसे मांसाहारी मनुष्य भी होते हैं । इसलिए मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं ।

हिंसक-अच्छा जो यही बात है तो जब तक पशु काम में आवें तब तक उनका मांस न खाना चाहिए, जब बूढ़े हो जावें वा मर जावें तब खाने में कुछ भी दोष नहीं ।

रक्षक-जैसा दोष उपकार करनेवाले माता-पिता आदि को वृद्धावस्था में मारने और उनके मांस खाने में है, वैसा उन पशुओं की सेवा न कर मारके मांस खाने में है और जो मरे पश्चात् उनका मांस खावे तो उसका स्वभाव मांसाहारी होने से अवश्य हिंसक होके हिंसारूपी पाप से कभी न बच सकेगा । इसलिए किसी अवस्था में मांस न खाना चाहिए ।

हिंसक-जिन पशुओं और पक्षियों अर्थात् जङ्गल में रहनेवालों से उपकार किसी का नहीं होता और हानि है, उनका मांस खाना वा नहीं ?

रक्षक-न खाना चाहिए, क्योंकि वे भी उपकार में आ सकते हैं । देखो, १०० भङ्गी (सफ़ाई कर्मचारी) जितनी शुद्धि करते हैं, उनसे अधिक एक सुअर वा मुर्गा अथवा मोर आदि पक्षी सर्प आदि की निवृत्ति करने से पवित्रता और अनेक उपकार करते हैं और जैसे मनुष्यों का खान-पान दूसरे के खाने-पीने से उनका जितना अनुपकार होता है, वैसे जङ्ली मांसाहारी का अन्न जङ्गली पशु और पक्षी हैं और जो विद्या वा विचार से सिंह आदि वनस्थ पशु और पक्षियों से उपकार लेवें तो अनेक प्रकार का लाभ उनसे भी हो सकता है । इस कारण मांसाहार का सर्वथा निषेध होना चाहिए ।

भला ! जिनके दूध आदि खाने-पीने में आते हैं, वे माता-पिता के समान माननीय क्यों न होने चाहिएँ ? ईश्वर की सृष्टि से भी विदित होता है कि मनुष्यों से पशु और पक्षी आदि अधिक रहने से कल्याण है, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्यों के खाने-पीने के पदार्थों से भी पशु-पक्षियों के खाने-पीने के पदार्थ घास, वृक्ष, फूल, फलादि आधिक रचे हैं और वे बिना जोते, बोये, सींचे, पृथिवी पर स्वयं उत्पन्न होते हैं और (ईश्वर) वहाँ वृष्टि भी करता है, इसलिए समझ लीजिए कि ईश्वर का अभिप्राय उनके मारने में नहीं, किन्तु रक्षा करने में है ।

हिंसक-जो मनुष्य पशु को मारके मांस खावें उनको पाप होता हैं और जो विकता मांस मूल्य से ले वा भैरव, चामुण्डा, दुर्गा, जखैया, वाममार्ग अथवा यज्ञ आदि की रीति से चढ़ा समर्पण कर खावें तो उनको पाप नहीं होना चाहिए, क्योंकि वे विधि करके खाते हैं

रक्षक-जो कोई मांस न खावे न उपदेश और न अनुमति आदि देवे तो पशु आदि कभी न मारे जावें, क्योंकि इस व्यवहार में बहकावट, लाभ और विक्री न हो, तो प्राणियों का मारना बन्द ही हो जावे । इसमें प्रमाण भी है-

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥

-मनु० अ० ५ श्लो० ५१

अर्थ-अनुमति-मारने की सलाह देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस के पकाने, परसने और खानेवाले आठ मनुष्य घातक-हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं ।

और भैरव आदि के निमित्त से भी मांस खाना, मारना वा मरवाना महापापकर्म है । इसलिए दयालु परमेश्वर ने वेदों में मांस खाने वा पशु आदि के मारने की विधि नहीं लिखी ।

मद्य भी मांस खाने का ही कारण है, इसीलिए यहाँ संक्षेप से लिखते हैं-

प्रमत्त-कहोजी ! मांस तो छूटा, परन्तु मद्य पीने में तो कोई भी दोष नहीं ?

शान्त-मद्य पीने में भी वैसे ही दोष हैं जैसेकि मांस खाने में । मनुष्य मद्य पीने से नशे के कारण नष्टबुद्धि होकर अकर्तव्य कर लेता और कर्तव्य को छोड़ देता है, न्याय का अन्याय और अन्याय का न्याय आदि विपरीत कर्म करता है और मद्य की उत्पत्ति विकृत पदार्थों से होती है और वह मांसाहारी अवश्य हो जाता है, इसलिए इसके पीने से आत्मा में विकार उत्पन्न होते हैं और जो मद्य पीता है, वह विद्यादि शुभ-गुणों से रहित होकर उन दोषों में फँसकर अपने धर्म, अर्थ, और मोक्ष फलों को छोड़ पशुवत् आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि कर्मों में प्रवृत्त होकर अपने मनुष्यजन्म को व्यर्थ कर देता है । इसलिए नशा अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन भी न करना चाहिए ।

जैसा मद्य है वैसे भांग आदि पदार्थ भी मादक है, इसलिए इनका भी सेवन कभी न करे, क्योंकि ये भी बुद्धि का नाश करके प्रमाद, आलस्य और हिंसा आदि में मनुष्य को लगा देते हैं । इसलिए मद्यपान के समान इनका भी सर्वथा निषेध ही है ।

इससे हे धार्मिक सज्जन लोगो ! आप इन पशुओं की रक्षा तन, मन और धन से क्यों नहीं करते ? हाय ! बड़े शोक की बात है कि जब हिंसक लोग गाय, बकरे आदि पशुओं को मारने के लिए ले-जाते हैं, तब वे अनाथ तुम-हमको देखके राजा और प्रजा पर बड़े शोक प्रकाशित करते हैं कि देखो ! हमको देखके राजा और प्रजा पर बड़े शोक प्रकाशित करते हैं कि देखो ! हमको विना अपराध बुरे हाल से मारते हैं और हम रक्षा करने तथा मारनेवालों को भी दूध आदि अमृत पदार्थ देने के लिए उपस्थित रहना चाहते हैं और मारे जाना नहीं चाहते । देखो ! हम पशुओं का सर्वस्व परोपकार के लिए है और हम इसीलिए पुकारते हैं कि हमको आप लोग बचावें, हम तुम्हारी भाषा में अपना दुःख नहीं समझा सकते और आप लोग हमारी भाषा नहीं जानते, नहीं तो क्या हममें से किसी को कोई मारता तो हम भी आप लोगों के सदृश्य अपने मारनेवालों को न्याय-व्यवस्था से फाँसी पर न चढ़वा देते ? हम इस समय अतीव कष्ट में हैं, क्योंकि कोई भी हमको बचाने में उद्यत नहीं होता और जो कोई होता है तो उससे मांसाहारी द्वेष करते हैं । अस्तु, वे स्वार्थ के लिए द्वेष करो तो करो, क्योंकि **'स्वार्थी दोषं न पशयति'** जो स्वार्थ साधने में तत्पर है, वह अपने दोषों पर ध्यान नहीं देता, किन्तु दूसरों को हानि हो तो हो मुझको सुख होना चाहिए, परन्तु जो उपकारी हैं वे इनके बचाने में अत्यन्त पुरुषार्थ करें, जैसाकि आर्य लोग सृष्टि के आरम्भ से आज तक वेदोक्त रीति से प्रशंसनीय कर्म करते आये हैं, वैसे ही सब भूगोलस्थ सज्जन मनुष्यों को करना उचित है ।

धन्य है आर्यावर्त देशवासी आर्य लोगों

को कि जिन्होंने ईश्वर के सृष्टिक्रम के अनुसार परोपकार में ही अपना तन, मन, धन लगाया और लगाते हैं, इसीलिए आर्यावर्तीय राजा, महाराजा, प्रधान और धनाढय लोग आधी पृथिवी में अङ्गल रखते थे कि जिससे पशु और पक्षियों की रक्षा होकर ओषधियों के सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों, जिनके खाने-पीने से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम आदि सद्गुण बढ़ें और वृक्षों के अधिक होने से वर्षाजल और वायु में आर्द्रता और शुद्धि अधिक होती है । पशु और पक्षी आदि के अधिक होने से खात भी अधिक होता है, परन्तु इस समय के मनुष्यों का इससे विपरीत व्यवहार है कि जङ्गलों को काट और कटवा डालना, पशुओं को मार और मरवा खाना और विष्ठा आदि का खात खेतों में डाल अथवा डलवाकर रोगों की वृद्धि करके संसार का अहित करना, स्वप्रयोजन साधना और पर-प्रयोजन पर ध्यान न देना इत्यादि काम उलटे हैं ।

'विषादप्यमृतं ग्राह्यम्' सत्पुरुषों का यही सिद्धान्त है कि विष से भी अमृत लेना । इसी प्रकार गाय आदि के विषवत्, महारोगकारी मांस को छोड़कर उनसे उत्पन्न हुए दूध आदि अमृत रोगनाशक हैं उनको लेना । अतएव इनकी रक्षा करके विषत्यागी और अमृतभोजी सबको होना चाहिए । सुनों बन्धुवर्गो ! तुम्हारा तन, मन, धन गाय आदि की रक्षारूप परोपकार में न लगे तो किस काम का है ? देखो, परमात्मा का स्वभाव कि जिसने विश्व और सब पदार्थ परोपकार ही के लिए रच रक्खे हैं, वैसे तुम भी अपना तन, मन, धन परोपकार ही के अर्पण करो ।

बड़े आश्चर्य की बात है कि पशुओं को पीड़ा न होने के लिए न्यायपुस्तक में व्यवस्था भी लिखी है कि जो पशु दुर्बल और रोगी हों उनको कष्ट न दिया जावे और जितना बोझ सुखपूर्वक उठा सकें उतना ही उनपर धरा जावे । श्रीमती राजराजेश्वरी श्रीविक्टोरिया महाराणी का विज्ञापन भी प्रसिद्ध है कि इन पशुओं को जो-जो दुःख दिया जाता है वह न दिया जावे, तो क्या भला मार डालने से भी अधिक कोई दुःख होता है ? क्या फाँसी से अधिक दुःख बन्दीगृह में होता है ? जिस किसी अपराधी से पूछा जाए कि तू फाँसी चढ़ने में प्रसन्न है वा बन्दीघर के रहने में ? तो वह स्पष्ट कहेगा कि फाँसी में नहीं, किन्तु बन्दीघर के रहने में ।

और जो कोई मनुष्य भोजन को उपस्थित हो, उसके आगे से भोजन के पदार्थ उठा लिये जावें और उसको वहाँ से दूर किया जावे, तो क्या वह सुख मानेगा ? ऐसे ही आजकल के समय में कोई गाय आदि पशु सरकारी जङ्गल में जाकर घास और पत्ता जोकि उन्हीं के भोजनार्थ हैं बिना महसूल दिये खावें वा खाने को जावें, तो बेचारे उन पशुओं और उनके स्वामियों की दुर्दशा होती है । जङ्गल में आग लग जावे तो कुछ चिन्ता नहीं, किन्तु वे पशु न खाने पावें । हम कहते हैं कि किसी अति क्षुधातुर राजा वा राजपुरुष के सामने आयो चावल आदि वा डबलरोटी आदि छीनकर न खाने देवें और उनकी दुर्दशा की जावे, तो इनको दुःख विदित न होगा क्या ? वैसा ही उन पशु-पक्षियों और उनके स्वामियों को न होता होगा ?

ध्यान देकर सुनिए कि जैसा दुःख सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिए और यह भी ध्यान में रखिए कि वे पशु आदि और उनके स्वामी तथा खेती आदि कर्म करनेवाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून होने से नष्ट हो जाता है, इसीलिए राजा प्रजा से कर लेता है कि उनकी रक्षा यथावत् करे, न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे । इसलिए आज तक जो हुआ सो हुआ, आगे आँखें खोलकर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिए और न करने दीजिए । हाँ, हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों को जता देवें और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सबकी रक्षा और बढ़ती करने में तत्पर रहें । सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आपपर पूर्ण कृपा करें कि जिससे हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़ सर्वोपकारक कर्मों को करके सब लोग आनन्द में रहें । इन सब बातों को सुन मत डालना, किन्तु सुन रखना, इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना

हे महाराजाधिराज जगदीश्वर ! जो इनको कोई न बचावे तो आप इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए ॥

इति समीक्षा-प्रकरणम् ।

हुआ दही 'उदश्वित' कहाता है ।

५. छाच या छच्छिका-जिस दही को मथकर मक्खन निकाल लिया गया हो और काफी पानी डाला गया हो, उसे 'छाछ या छच्छिका' कहते हैं ।

२५. गाय का गोबर और मूत्र मनुष्य के त्वचा रोगों के उपचार में विशेष उपयोगी है । गाय के गोबर का काम करनेवाले के हाथों में खुजली, दाद और एग्ज़िमा-जैसे रोग कभी नहीं होते । गाय के गोबर में दुर्गन्ध तो होती ही नहीं, उससे लिपे स्थान पर कीटाणु, मक्खी, मच्छर आदि नहीं आते । वस्तुतः आयुर्वेद के ग्रन्थों में गाय के दूध आदि से होनेवाले रोगों का उपचार-सम्बन्धी जो ज्ञान बीजरूप में उपलब्ध है उसका विधिवत् विकास होने पर चिकित्सा की ऐसी विधियाँ निकल सकती हैं जिनका अभी तक मूल्यांकन नहीं हो पाया है ।

लाख दुःखों की एक दवा-गोदूध का मट्ठा-छाछ

दही को मथकर मक्खन निकाला गया पौष्टिक पेय 'मट्ठा' कहलाता है । यह सभी के लिए प्रायः समानरूप से हितकारी होता है । इसका उपयोग गाँवों में अतिप्राचीन काल से होता आया है । आयुर्वेद के प्रवर्तक आचार्य धन्वन्तरि के अनुसार इसकी नौ किस्में होती हैं-मथित, गोरस, घोल, द्रव, विलोडित, श्वेत, दंडाहत, तक्र तथा छाछ ।

इनमें सर्वोत्तम मट्ठा गाय के दही से तैयार होता है जिसकी तासीर दही की कोटि पर निर्भर करती है । इसमें विद्यमान लैक्टिक नाम के जीवाणु के कारण शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे लोग स्वस्थ और दीर्घायु रहते हैं । बूरा (शक्कर) के साथ तो इसका सेवन उत्तम पाचक सिद्ध होता है। इसके नियमित उपयोग से आँखों की ज्योति, दाँतों की मजबूती आदि यथावत् रहती है, साथ ही यह अरुचि, पोलियो, मंदाग्नि, उलटी, वात, बवासीर, रक्तचाप, संग्रहणी, वायुगोला, अतिसार, प्रमेह, रक्तसंचार, कोढ़, पेट की गड़बड़ी, पेटदर्द, तिल्ली, प्लीहा, मोटापा, मूत्ररोग, प्यास इत्यादि में भी गुणकारी है ।

వైకోం సత్యాగ్రహం

అనుకున్నదొకటి. గాంధీగారి దయవల్ల అయింది వేరొకటి.

టి.కె.మాధవన్ చొరవతో, స్థానిక కాంగ్రెసు ప్రముఖుల సహకారంతో వైకోంలో ఏర్పాటైన అస్పృశ్యత కమిటీ తొలుత తలపెట్టింది విప్లవాత్మక కార్యక్రమమేమీ కాదు. గాంధీ తత్వానికి అభ్యంతకరమైన గుళ్లోకి బలవంతంగా చొరబడటం, రోడ్ల మీద ధర్నా చేయడయంలాంటి అంశాలు అందులో లేవు.

బజారు నుంచి శివాలయం వైపు నాలుగువైపులా నాలుగు వీధులున్నాయి. ఒక్కోటీ సుమారుగా 150 గజాలు. నాటి మీద కుక్కలు, పందులు యథేచ్ఛగా తిరుగవచ్చు. మతం మారిన అవర్ణులకూ అడ్డులేదు. ఇంకా స్వధర్మాన్నే అంటిపెట్టుకుని, హిందువులుగా మిగిలిన కడగొట్టు కులాల వారు మాత్రం అక్కడ అడుగుపెట్టడం నిషిద్ధం. అంత్యజుల పౌరహక్కును గట్టి చేయటం కోసం, ఈ దుర్మార్గపు ఆంక్షను ఉల్లంఘించి, నాలుగు నిషిద్ధ వీధులగుండా అచ్చమైన గాంధేయ పద్ధతిలో తీసుకువెళ్లి, ఆలయ ముఖద్వారం వెలుపల వారి చేత ప్రార్థనలు చేయించాలని తొలి ఆలోచన. పదేళ్ల కింద దక్షిణాఫ్రికాలో సమ్మె కట్టిన రెండు వేల మంది ఇండెంటు కూలీలను నిషిద్ధ సరిహద్దుగుండా చరిత్రాత్మకమైన మార్చ్ చేయించిన గాంధీగారు ఇపుడు తమ చేతా అలాంటి అద్భుత పోరాటం చేయించగలరని నిర్వాహకుల ఆశ.

తప్పక పోరాడవలసిందే, కాంగ్రెసు అందులో పాలుపంచుకోవలసిందే అని చెప్పిన మహాత్ముడు తీరా అందరూ కలిసి ఆలోచించి, కార్యచరణ ప్రణాళిక వేశాక అది పనికిరాదన్నాడు. ఫలానా వారికి ప్రవేశం లేదు - అని అధికారులు బోర్డులు పెట్టాకు ఇక ఆ వీధులలోకి అవర్ణులు ఎలా వెళతారు? వెళితే చట్టాన్ని చేతుల్లోకి తీసుకునన్నట్టే. కాబట్టి నిషేధపు బోర్డులు పెట్టిన చోటే సత్యార్గహం జరగాలి. అదికూడా గుంపుగా కాదు. ముగ్గురికి మాత్రవే అనుమతి - అన్నాడు గాంధీజీ.

'చిత్తం' అన్నారు కార్యకర్తలు. ఆ ప్రకారమే ఒక ఇజవ కులస్థుడు, ఒక పులయ కులస్థుడు (ఇవి రెండూ పంచమ వర్ణాలు). ఒక నాయర్ కులస్థుడు - అలా రోజుకు ముగ్గురిని సత్యాగ్రహానికి ఎంపిక చేశారు. 1924 మార్చి 30 నుంచి మొదలుపెట్టి ఆ విధంగా ముగ్గురేసి సత్యాగ్రహులు నిషేధపు బోర్డులు పెట్టిన చేటికి వెళతారు. పోలీసులు మీదే కులమని వారిని అడుగుతారు. వీరు చెబుతారు. మీలో ఇద్దరికి అనుమతి లేదు. వెనక్కి పొమ్మంటారు పోలీసులు. ముగ్గురమూ కలిసే ముందుకు పోతామని వీరంటారు. పోలీసులు అరెస్టు చేస్తారు. మేజిస్ట్రేటు ఖైదు, జరిమానా విధిస్తాడు. జరిమానా కట్టం అని వీరంటారు. అయితే ఇంకాస్త శిక్ష ఎక్కువ వేస్తున్నామని మేజిస్ట్రేటు చెప్పి జైలుకు పంపిస్తాడు.

ఇలా రోజూ ముగ్గురు అరెస్టవుతూ పోయేసరికి కొన్నాళ్లకు వైకోం సత్యాగ్రహం పేరు దేశమంతటా మారు మోగింది. కనీస మానవ హక్కు కోసం అంత్యజులు సాగిస్తున్న పోరుకు అన్ని వర్గాల నుంచి, అన్ని ప్రాంతాల నుంచి సానుభూతి ఉప్పొంగింది. సత్యాగ్రహ స్థలానికి సమీపాన ఏర్పాటు చేసిన సత్యాగ్రహ శిబిరం ఎక్కడెక్కడి నుంచో వచ్చిన మద్ధతుదారులతో, స్థానిక దళిత, దళితేతర ప్రజానీకంతో కిక్కిరిసింది. అక్కడ చేరిన వారికి భోజన సదుపాయాలు ఉచితంగా చేసి పెడతామంటూ పంజాబీ అకాలీలు ముందుకొచ్చారు. దారుణ కుల వివక్షపై కడపటి కులాల వారి అపూర్వ ప్రతిఘటనకు అయ్యే ఖర్చులు భరించటానికి బర్మా, సింగపూర్, మలేసియా వంటి దేశాల్లోని భారతీయులు, ఇతర రాష్ట్రాలలోని క్రైస్తవులు, మహమ్మదీయులు స్వచ్ఛందంగా ముందుకొచ్చారు. కేరళలో బహుళ సంఖ్యలో ఉన్న సిరియన్ క్రిస్టియన్ వర్గానికి చెందిన ప్రసిద్ధ గాంధీవాది, గాంధీగారికి అనుంగు శిష్యుడు, మహాత్ముడు జైలుకెళ్లిన కాలంలో **'యంగ్ ఇండియా'** పత్రిక సంపాదక బాధ్యత మోసిన జార్జి జోసెఫ్ పంచమ సోదరుల పక్షాన తాను కూడా సత్యాగ్రహం చేయడానికి సిద్ధపడ్డాడు. ఆ సంగతి గురువుగారికి చెబితే సంతోషిస్తారనుకుని రంగంలోకి దిగబోతూ ఉత్తరం రాశాడు.

గురువుగారు సంతోషించకపోగా మందలించారు. "అది హిందువులు చేయవలసిన పని. తమను తాము శుద్ధి చేసుకోవలసింది వాళ్లు. నువ్వు కావాలనుకుంటే నీ రాతల ద్వారా సానుభూతి తెలపవచ్చు. కాని ఉద్యమాన్ని నడపటం, సత్యాగ్రహం చేయటం నువ్వు చేయాల్సిన పని కాదు" అని 1924 ఏప్రిల్ 6న జోసెఫ్‌కు గాంధీజీ జాబు రాశారు. అది అతడికి ఆలస్యంగా చేరింది. అప్పటికే అతడు పోరాటంలోకి దిగాడు. మాధవన్, మిగతా నాయకులు అరెస్టు అయ్యాక వేరెవరూ లేకపోవటంతో తానే ఉద్యమ బాధ్యతను పైన వేసుకున్నాడు. ఒకరోజు తానూ అరెస్టు అయ్యాడు. ఆ వర్తమానం తెలియపరుస్తూ అక్కడి ఉద్యమం నడిపించటానికి మీ కుమారుడు దేవదాస్‌నో, మరొకరినో అర్జంటుగా పంపించమని గాంధీజీకి తంతి ఇచ్చాడు. పెద్దాయన పట్టించుకోలేదు.

కొన్నాళ్లు గడిచాయి. రోజూ సత్యాగ్రహాలూ, అరెస్టుల వార్తలతో దేశమంతా అట్టుడికింది. పోలీసులకు

చెడ్డపేరు వచ్చింది. అది గ్రహించి ప్రభుత్వం అరెస్టులు ఆపేసింది. బోర్డులు పెట్టిన చోటు దాకా ఎవరూ రాకుండా రోడ్డుకు అడ్డంగా బారికేడ్లు పెట్టించింది. ఇక చేయగలిగినవి రెండే. బారికేడ్లను దాటి ముందుకైనా పోవాలి, లేదా అక్కడే కూచుని నిరాహారదీక్ష అయినా చేపట్టాలి.

"Kerala itself unable without outside help in leaders Men Money. Volunteers not arrested now but road physically blocked. No alternative but hunger strike. Do you approve this Wire advice" (నాయకులు, కార్యకర్తలు, ధన సహాయం బయటి నుంచి రాకుండా ఉద్యమం నడపటం కేరళ తరం కాదు. వలంటీర్లను అరెస్టు చేయడం లేదు. రోడ్డును మూసేశారు. నిరాహారదీక్ష వినా మార్గం లేదు. మీరు అమోదిస్తారా ? టెలిగ్రాం ద్వారా సలహా ఇవ్వండి') అంటూ సి.రాజగోపాలచారి ఏప్రిల్ 15న గాంధీజీకి తంతి ఇచ్చాడు.

మహాత్ముడు దేన్నీ ఒప్పుకోలేదు.

YOU SHOULD NOT FAST NOR BREAK NOR SCALE FENCE (మీరు నిరాహారదీక్ష చేయరాదు. కంచెను దాటరాదు. పగులగొట్టనూ కూడదు) అని స్థానిక నాయకుడు కె.ఎస్.సంబూద్రిపాద్‌కు ఏప్రిల్ 24న గాంధీజీ టెలిగ్రాం ఇచ్చాడు. ఏది చేస్తే ఫలితం బాగా ఉంటుంది అని కాక ఏది సరైనది అనే సత్యాగ్రహి ఆలోచించాలని కూడా అందులో పేర్కొన్నాడు. ఏది సరైనది ఏది కాదు అన్న దానికి **'యంగ్ ఇండియా'** 1-5-1924 తేదీ సంచికల్లో పెద్ద వివరణ ఇచ్చాడు. దాని సారాంశం ఏమిటంటే-

అస్పృశ్యత అనేది హిందువుల పాపం. దానికి వాళ్లే బాధలు పడాలి. వాళ్ళే తమను తాము శుద్ధి చేసుకోవాలి. బయటి వాళ్ల జోక్యం చేసుకుంటే వారి కళ్లు తెరచుకోవు. వారి తప్పు వారికి తెలిసి రాదు. ఏ సంస్కరణయినా లోపలి నుంచి వచ్చినప్పుడే శాశ్వతంగా నిలుస్తుంది.

హిందువులు కానివారు ఎంత మంచివారైనా ఈ వ్యవహారంలో తలదూర్చ కూడదు. హిందువులు కానివారి నుంచి దీని కోసం ఆర్థిక సహాయం తీసుకోకూడదు. హైందవేతరుల డబ్బుతో నేను హిందూ దేవాలయాన్ని నిర్మించకూడదు. అస్పృశ్యతను నిర్మూలించడం కూడా గుడి కట్టటమంత గొప్ప పనే. అలాగని కేరళకు వెలుపల ఉన్న హిందువుల నుంచి కూడా దీని నిమిత్తం ఎలాంటి ధన సహాయం స్వీకరించకూడదు. ఎందుకంటే - అలా తీసుకుంటే స్థానికంగా ఉన్న హిందువులు సంస్కరణకు సిద్ధంగా లేరని ఒప్పుకున్నట్టే అవుతుంది. సత్యాగ్రహు లకు స్థానిక హిందువుల సానుభూతి ఉంటే అవసరమైన డబ్బంతటినీ వారు స్థానికంగానే సమీకరించాలి. అది చేతకాకపోతే సత్యా గ్రహులు ఆకలితో మాడిపోవాలి. లేకపోతే వారు సంస్కరించదలచిన స్థానిక హిందువుల సానుభూతి వారికి దక్కదు. సత్యాగ్రహమనేది ప్రే ప్రక్రియ. బయటి వాళ్ల సహాయం చేస్తే అది చెడుతుంది. ఇలా చూసినప్పుడు సిక్కులు నిర్వహించతలపెట్టిన ఉచిత వంటశాల వైకోంలో భీతావహులైన హిందువులకు పెద్ద బెడద. దానివల్ల మడి, ఆచారం పాటించే హిందువులకు తమ మతానికి ముప్పు వచ్చిందన్న అభిప్రాయం కలుగుతుంది. ఎంతటి ఛాందసవాదికైనా అపోహ కలగకుండా చూడాల్సిన బాధ్యత ఉద్యమ నిర్వాహకుల మీద ఉంది.

అధికారులు రోడ్లను బారికేడ్లతో మూసేస్తున్నారు. మరి మేము వాటిని దాటి వెళ్లాలా ? పగలగొట్టాలా ? రోడ్ల మీదికి వెళ్లనివ్వాలంటూ ఉపవాస దీక్ష చేయవచ్చా? అని నాకు టెలిగ్రాం వచ్చింది. కంచెలను చొచ్చుకు వెళితే మనం కోరుకున్నట్టు జైలుశిక్ష పడుతుంది. కాని అది పౌర ఉల్లంఘన కిందికి రాదు. అనాగరికమైన క్రిమినల్ చర్యే అవుతుంది.

అలాగే నిరాహారదీక్షా పనికిరాదు. అన్యాయంగా బాధలు పెట్టేవాడికి వ్యతిరేకంగా మీరు ఉపవాసం చేయలేరు. మనల్ని ప్రేమించేవాడి మీదనే దాని ప్రయోగించాలి. అతడి నుంచి హక్కులను గుంజుకోవటానికి కాదు. ఇప్పటిదాకా నన్ను ప్రేమించేవారి పైనే నేను ఉపవాసానికి కూచున్నాను. నన్ను శత్రువులా చూసే దయ్యర్‌ను సంస్కరించ డానికి నేనాపని చేయలేను. అర్థమైందను కుంటా.

(*Collected Works of Mahatma Gandhi*, Vol.27.P.P.321-323)

ఇది చదివిన వారికి అర్థం కాకపోగా అయోమయం ఎక్కువవవుతుంది.

వందల ఏళ్లుగా పాతుకుపోయిన దుష్ట సంప్రదాయానికి, సాంఘిక దురాచారానికి వ్యతిరేకంగా ఉద్యమించాలంటే మనుషులు, డబ్బు, సామగ్రి వగైరాల అవసరం ఎంతో ఉంటుంది. కటిక దారిద్ర్యం అనుభవించే అట్టడుగు కులాల వారికి వాటిని సొంతంగా సమకూర్చుకునే స్తోమత ఉండదు. వారి ఆర్తిని, అన్యాయానికి వ్యతిరేకంగా వారు చేవట్టిన పోరాటం తీవ్రతను, దాని ఉదాత్తతను అర్థం చేసుకున్న వారందరూ తలా ఒక చెయ్యి వేస్తే తప్ప ఉద్యమ రథం కదలదు. అన్యాయం చేసింది హిందువులు కాబట్టి, ఆ అన్యాయాన్ని ఎదిరించే పోరాటంలో బాధితుల పక్షాన నిలబడే యోగ్యత హిందువులు కాని వారికి ఉండదు అంటే అది బాధకుల నెత్తిన పాలుపోయటమే కాదా ? కనీసం హిందువులయిన బయటి వారి నుంచి కూడా సహాయం పొందడానికీ వీల్లేదంటే ఎలా ?

స్థానికంగా ఉన్నవారిలో అత్యధికులు సంప్రదాయవాదులు. అగ్రకులాలకు చెంది కూడా ఏ గాంధీ ప్రభావం వల్లో జాతీ యోద్యమం వైపు మళ్లి, అట్టడుగు వర్గాల పక్షాన నిలవాలన్న సద్భావం ఉన్నవాళ్ల సంఖ్య తక్కువ. వారి చేతిలోని వనరులూ తక్కువ. బయటి నుంచి సహాయమే తీసుకోకూడదు. అంతా లోపలివాళ్లే చూసుకోవాలి అంటే అయ్యే పనేనా ? పాపం చేసింది హిందువులు కనుక వాళ్లే దానికడిగేసుకోవాలి అని చెప్పి హైందవేతరుల ప్రమేయాన్ని కూడదంటే - వైకోంలోని ఛాందస హిందువులు తమంతట తాము మనసు మార్చుకుని పాపం కడిగేసుకుంటారా ? వారికి వ్యతిరేకంగా పళ్ల బిగువున పోరాడుతున్న దీనులు వారి దయా ధర్మం మీదే ఆధారపడి, ప్రేమ పూర్వకంగా వారి మనసును మార్చే శుభ ఘడియ కోసం నానాచావులు చస్తూ ఎదురు చూడాలా ?

బిహార్, గుజరాత్‌లలో అంతకు ముందు తాను మొదలెట్టిన సత్యాగ్రహాలను ఆ రాష్ట్రాలకు మాత్రమే పరిమితం చేయకుండా, బయటి వారినీ పాలుపంచుకోనిచ్చింది ఇదే మహాత్ముడు కదా ? తాను చేస్తే ఒప్పు అయింది కేరళలో తప్పు ఎలా అయింది ? అణగారిన అవర్ణులు చేస్తున్న పౌర హక్కుల పోరాటానికి చేయూత ఇవ్వాలని ఎక్కడో పంజాబ్ నుంచి స్వచ్ఛందంగా వచ్చి వైకోం బాధితులకు తమ ఖర్చుతో భోజన సదుపాయం కలిగించడాన్ని కూడా మహాపరాధంగా పరిగణించి ఉన్నపళాన

వెనక్కి పంపేయాల్సిన అవసరమేమొచ్చింది? వైకోం సత్యాగ్రహానికి తోడ్పడటానికి తిరువాన్కూరు సంస్థానవాసులు మాత్రమే అర్హులని మొదటి చెప్పిన మహాత్మాజీ, మహా అయితే మద్రాసు ప్రెసిడెన్సీ వారి వరకూ అందులో పాల్గొనవచ్చని తరవాత కాస్త సడలింపు ఇచ్చాడు. దక్షిణాది రాష్ట్రాలకు విస్తరించిన మద్రాసు ప్రెసిడెన్సీ వారికి పనికొచ్చింది ఉత్తరాన ఉన్న పంజాబ్‌కు మాత్రం ఎందుకు నిషిద్ధమైంది ? సత్యాగ్రహానికి ఉత్తర, దక్షిణాల భౌగోళిక లెక్కలు ఉంటాయా ?

అదొక్కటే కాదు. మాధవన్ లాంటివాళ్లు తన దగ్గరికి వచ్చి సమస్యను వివరించి కాంగ్రెసు ప్రమేయాన్ని అర్థించినప్పుడు అది తప్పక కాంగ్రెసు చేపట్టదగిన కార్యక్రమమేనని ఒప్పుకున్న మహాత్ముడు ఆందోళన తీవ్రమయ్యాక గమ్మత్తుగా మాట మార్చాడు. సత్యాగ్రహాన్ని సాగిస్తున్న స్థానిక నాయకులందరూ జైలుపాలయ్యాక, నాయకత్వ శూన్యాన్ని పూరించడానికి బయటి నుంచి ఒక సమర్థుడిని ఎంపిక చేయాలని కేరళ కాంగ్రెసు వారు మొత్తుకుంటే గాంధీజీ ఆ పని ఎంతకీ చేయకుండా తాత్సారం చేశాడు. నాయకత్వమనేది స్థానికుల నుంచే ఉండాలని, వైకోంలో నడుస్తున్నది కాంగ్రెసు కార్యక్రమంగా పరిగణించకూడదని, జాతీయోద్యమం ఇలాంటి స్థానిక వివాదాల్లో పిక్చర్‌లోకి రాకూడదని సమయానికి తగ్గట్టు కొత్త వాదం అందుకున్నాడు. దానికో గొప్ప వివరణ కూడా ఇచ్చాడు.

కాంగ్రెసు లక్ష్యం బ్రిటిషు పాలనను అంతమొందించడానికట, తిరువాన్కూరు స్వతంత్ర సంస్థానం. బ్రిటిషు పరిపాలనలో లేదు కాబట్టి కాంగ్రెసు అక్కడ ఏమి జరిగినా కలగజేసుకోకూడదట. భలే ! ఎక్కడో దేశాంతరంలో ఉన్న కాన్‌స్టంటినోపిల్ కూడా కాంగ్రెసు సంస్థ కార్యక్షేత్రంలో ఏమీ లేదు కదా ? మరి అక్కడ కాలం చెల్లిన ఖలీఫా వ్యవస్థకు కృత్రిమంగా ప్రాణం పోసే తనకుమాలిన పనిని ఇదే మహాత్ముడు అదే కాంగ్రెసు సంస్థ మెదకు తగిలించి ఖిలాఫత్ లొల్లిని ఎందుకు లంకించుకున్నాడు ? ఖండాంతరంలోని టర్కీకంటే భారత దేశంలోనే ఉన్న కేరళ 'భారత జాతీయ' కాంగ్రెసుకు ఇంకా దగ్గర కాదా ?

'मनुष्य की उन्नति के सार्वभौमिक 10 स्वर्णिम सिद्धान्त व मान्यतायें'

–मनमोहन कुमार आर्य,

मनुष्य जीवन ईश्वर की जीवात्मा को अनमोल देन है। सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह इस संसार व प्राणीमात्र के बनाने व पालन करने वाले ईश्वर को जानें और साथ हि अपने कर्तव्य को जानकर उसका निर्वाह करें। हम आगामी पंक्तियों में इस विषय का उल्लेख करेंगे जिसको पूर्णतया जानकर व उनका पालन करने से मनुष्य जीवन की निश्चित रुप से चरम उन्नति व सफलता की प्राप्ति होती है। यह सभी नियम वेदों के मर्मज्ञ व साक्षात्कृतधर्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती के बनाये हुए हैं जो स्वयं में अनूठे व अपूर्व हैं। **पहला नियम है कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।'** इस नियम में बताया गया है कि संसार में जितनी भी सत्य विद्यायें हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है और इन सत्य विद्याओं से इतर जो सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, पृथिवीस्थ सभी भोग्य पदार्थ और नक्षत्र आदि ब्रह्माण्ड के अंग आदि हैं, वह व उसके सभी पदार्थों का स्रष्टा, रचयिता वा आदि मूल परमेश्वर है। इस सत्य सिद्धान्त से इस मान्यता का खण्डन हो जाता है कि यह संसार बिना किसी ईश्वर के स्वमेव बना या या फिर सदा से है और सदा ऐसा ही रहेगा। यह सर्वमान्य है कि कोई भी बुद्धिपूर्वक रचना स्वतः वा स्वमेव कदापि न होती है न हो सकती है जिस प्रकार कि रसोई में रोटी बनाने का सभी सामान आटा, जल, तवा, परात, ईंधन, चकला, बेलन आदि उपस्थित हो तो भी, अनन्त काल बीतने पर भी, बिना कर्ता के रोटी स्वमेव नहीं बनती। इसी प्रकार यह सृष्टि भी बिना कर्ता=ईश्वर के नहीं बनती। इसका सृष्टि का कर्ता सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा आंखों से न दिखने वाली सत्ता ईश्वर है।

दूसरा स्वर्णिम नियम है कि **'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।'** यह नियम सब सत्य विद्याओं और सब पदार्थों के आदि मूल परमेश्वर के स्वरुप का यथार्थ स्वरुप प्रस्तुत करता है। सच्चिदानन्द शब्द का अर्थ कि ईश्वर सत्य है, चेतन है और आनन्द स्वरुप है अर्थात् यह तीनों गुण व लक्षण ईश्वर में हैं। इनके अतिरिक्त वह आकार रहित, अनन्त शक्तिशाली, सब प्राणियों के प्रति न्याय करने वाला, दया का सागर, जिसका कभी जन्म न हुआ न होगा और न वह जन्म व अवतार ले सकता है, जिसमें कभी किसी प्रकार का कोई विकार नहीं होता, जो अनादि है अर्थात् जिसका आरम्भ कभी नहीं हुआ व जो सदा से है, अनुपम है अर्थात् जिसके गुण, कर्म व स्वभाव सर्वश्रेष्ठ है और जिसके समान अन्य कोई सत्ता व जीवात्मा आदि नहीं हैं, सारे संसार व ब्रह्माण्ड का एकमात्र वही आधार है, सभी ऐश्वर्यों का स्वामी है, सारे ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापक है, ऐसा कोई स्थान नहीं है कि जहां वह ईश्वर उपस्थित न हो, वह सर्वान्तर्यामी अर्थात् घट–घट का वासी है, वह अजर है अर्थात् वह बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था सहित ह्रास व उन्नति से

పనికిమాలిన పరిష్కారం

వైకోం కేరళలో చిన్న ఊరే అయినా అక్కడ జరిగిన చరిత్రాత్మక సత్యాగ్రహంలో గొప్పగొప్ప వాళ్లు పాలుపంచుకున్నారు.

తమిళులు 'పెరియార్' అని పిలుచుకున్న ఇ.వి. రామస్వామి నాయకర్ మదురైలో పర్యటిస్తుండగా వైకోం విశేషాల కబురు అందింది. వెంటనే అటు నుంచి అటే సపరివారంగా అక్కడికి తరలి వెళ్లి 1924 ఏప్రిల్ 14న సత్యాగ్రహంలో పాల్గొని అరెస్టు అయ్యాడు. తిరువాన్కూరు మహారాజుకు ఆయన మీద ఉన్న గౌరవం కొద్దీ నెల రోజుల జైలుశిక్ష మాత్రమే వేశారు.

బయటికి వచ్చాక, తమరు మర్యాదగా మద్రాసుకు వెళ్లిపోతే బావుంటుందని అధికారులు సూచించారు. పెరియార్ వినలేదు. రెండోసారి నిషేధాజ్ఞలు ధిక్కరించిన నేరానికి ఆయనకు ఆరు నెలల కఠిన శిక్ష విధించి తిరువనంతపురం సెంట్రల్ జైలుకు తరలించారు. అనంతరం పెరియార్ భార్య నాగమ్మ రంగంలో దిగింది. జైలుకు వెళ్లిన జార్జి జోసెఫ్, టి.కె. మాధవన్, గోవిందన్ చమార్ వంటి ప్రముఖుల భార్యలను ఆమె కూడగట్టి, విస్తృతంగా తిరిగి మహిళలను సమీకరించింది. అంతా కలిసి ఇంటింటికీ తిరిగి గుప్పెడు బియ్యాన్ని, చిల్లర డబ్బులను శిబిర నిర్వహణ నిమిత్తం సేకరించారు. మే 20న నాగమ్మ అరెస్టు అయింది. అయినా ఆమె స్ఫూర్తితో మహిళా సత్యాగ్రహం ముందుకు సాగింది.

వైకోం వ్యవహారంలో పెరియార్ కలగజేసుకోవటం గాంధీగారికి నచ్చలేదు. బయటి వారు తలదూర్చరాదన్న మహాత్ముడి ఆంక్షను పెరియార్ లెక్కచేయలేదు. గాంధీవాదానికి తమిళనాడు కాంగ్రెసూ కట్టుబడలేదు. ఆ పోరాటంలో నిర్వహించిన పాత్రకు గుర్తింపుగా నాయకర్ ను 'వైకోం వీరర్' అని ప్రస్తుతిస్తూ 1925లో కాంచీపురం మహాసభలో రాష్ట్ర కాంగ్రెసు ఏకగ్రీవ తీర్మానం చేసింది.

అలాగే శ్రీనారాయణ గురు. రాజకీయాలు, ఆందోళనలు ఆయన తత్వానికి సరిపడవు. కాంగ్రెసు కార్యక్రమాల్లో ఆయన ఎన్నడూ పాలుపంచుకోలేదు. అయినా వైకోంలో కాంగ్రెసువారు మొదలెట్టిన సత్యాగ్రహాన్ని హిందూ సమాజాన్ని శుద్ధిచేసే కార్యంగా ఎంచి గురుస్వామి సంపూర్ణ సహకారం అందించాడు. వైకోం దగ్గరి తన వెల్లూరు మఠాన్ని ప్రధాన కార్యస్థానంగా సత్యాగ్రహులకు అందజేశాడు. తాను స్వయంగా వెయ్యి రూపాయల (ఆ రోజుల్లో అది పెద్ద మొత్తం) విరాళం ఇచ్చి, శివగిరిలో నిధి సేకరణకు హుండీ ఏర్పాటు చేయించాడు. సత్యాగ్రహం పని చూడటానికి ఇద్దరు ముఖ్య శిష్యులను వైకోం శిబిరానికి ప్రత్యేకంగా పంపించాడు.

ఉద్యమం ఉధృతంగా నడుస్తున్న కాలంలో నారాయణగురు పడవ మీద వైకోం వెళ్లాడు. వేల మంది అభిమానులు ఆయనకు ఘన స్వాగతం పలికి, పెద్ద ఊరేగింపుతో ఊళ్లోకి తీసుకువెళ్లారు. గురుజీ రెండు రోజులు ఆశ్రమంలో ఉండి ఏర్పాట్లన్నీ పర్యవేక్షించాడు. అస్పృశ్య కులానికి చెందిన కుర్రవాడు సామూహిక వంటశాలలో పని చేస్తుండటం చూసి, తన చిరకాల కృషి ఫలిస్తున్నందుకు సంతోషించాడు. సత్యాగ్రహ సాఫల్యాన్ని కోరుతూ వేలమంది చూస్తుండగా జీవితంలో మొదటిసారి బహిరంగ ప్రార్థన చేశాడు.

ఆ సమయాన ఎవరో భక్తుడు తమకు ఎదురవుతున్న సమస్యను గురుస్వామి ముందుకు ఉంచాడు. 'పోలీసులు అడ్డంగా కంచె వేసి మమ్మల్ని నిషిద్ధ రహదారి దాకా పోనివ్వటం లేదు; కంచె దగ్గర నిలబడితే అరెస్టు చేయటం లేదు; నీళ్లు కొట్టి, హింసించి, అవమానించి మా ఓరిమిని పరీక్ష చేస్తున్నారు. మేము ఇప్పుడు ఏమి చేయాలి' అని భక్తుడు అడిగితే నారాయణగురు ఇలా బదులు ఇచ్చాడు:

'బాధలకు సిద్ధిపడాలి. త్యాగాలు చేయాలి. కాని అలాగని నీళ్లలో తడిసి ముద్ద అవుతూ ఆకలితో నకనకలాడవలసిన పనిలేదు. మీ దారిలో కంచె అడ్డమొస్తే దిక్కులు చూడకండి. ధైర్యంగా దూకి వెళ్లండి. ఆ రోడ్డు మీద నడవటంతోనే ఆగకండి - గుడిలోకి ప్రవేశించండి. ప్రతి గుడికి, ప్రతి రోజు, ప్రతి ఒక్కరూ వెళ్లండి. ప్రసాదం సిద్ధంగా ఉంటా తీసుకోండి. ఆలయంలో ఉచిత అన్నదానం జరిగేచోటికి వెళ్లి అందరి సరసన కూర్చోండి. నేను ఇలా చెప్పినట్టు అన్ని పత్రికల్లో వేయించండి. కాని ఎక్కడా దౌర్జన్యానికి దిగవద్దు. మీ మీద దౌర్జన్యం జరిగినా సరే బలప్రయోగం పనికిరాదు'

నారాయణగురు చేయమన్నది అచ్చమైన సత్యాగ్రహం. ఆయన అన్నదానిలో అస్పష్టత లేదు. అనౌచిత్యం లేదు. శాంతి, అహింస, సత్యాగ్రహ సిద్ధాంతాల్లో నమ్మకం ఉన్నవారెవరికీ అభ్యంతరం ఉండాల్సిన అవసరం లేదు. కాని ఆ సిద్ధాంతాలను కాచి వడబోసిన మహాత్ముడికి మాత్రం ఆ సద్గురువు మాటలు వెగటుగా తోచాయి. 'యంగ్ ఇండియా' 19-6-1924 సంచికలో ఆయన అన్నదాన్ని ఇలా ఖండించాడు:

His Holines Sree Narayana Guru, the spritual leader of the Tiyas... suggests that volunteers should advance along barricaded roads and scale the barricades. They should enter temples and sit with others to dine... Now the action proposed is not Satyagraha for scaling for scaling barricades is open violence. If you may scale the barricades, why not break open temple doors and even pierce through temple walls ? How are volunteers to pierce through a row of policemen except by using physical force ? They will have gained their point by something the reverse of Satyagraha. **[Collected Works of Mahatma Gandhi,** Vol.28,p.171]

(మూసివేసిన రోడ్ల మీదికి బారికేడ్లను దూకి వెళ్లాలని 'తియ్యా'ల ఆధ్యాత్మిక గురువు శ్రీనారాయణ గురు వలంటీర్లకు సలహా ఇస్తున్నారు. దేవాలయంలోకి ప్రవేశించి, ఇతరులతోపాటు భోజన పంక్తిలో కూచోవాలనీ ఆయన చెబుతున్నా... ఆయన ప్రతిపాదిస్తున్నది సత్యాగ్రహం కాదు. ఎందుకంటే బారికేడ్లను దూకడమంటే బహిరంగ దౌర్జన్యమే. బారికేడ్లను మీరు దూకవచ్చునంటే, ఇక ఆలయం తలుపులను

మాత్రం ఎందుకు పగలగొట్టకూడదు ? గుడి గోడలను చొప్పుకుని ఎందుకు వెళ్లకూడదు? బలం ఉపయోగించనిదే పోలీసుల బారును చీల్చుకుని వెళ్లటం ఎలా సాధ్యం ? దానివల్ల వారు అనుకున్నది సాధించవచ్చు. కాని సత్యాగ్రహానికి వ్యతిరేకరమైన పద్ధతి ద్వారా.)

'ఎక్కడా దౌర్జన్యానికి దిగవద్దు; మీ మీద దౌర్జన్యం జరిగినా సరే బలప్రయోగం పనికిరాదు' అని విస్పష్టంగా హెచ్చరించిన నారాయణ గురు హితబోధకు గాంధీగారు చేసింది బుద్ధిపూర్వకమైన వక్రీకరణ కాదా ? బారికేడ్లను దూకండి అంటే దూకే ప్రయత్నం చేయండి అనే తప్ప అడ్డుకున్నవారి నడ్డి విరిచి దౌర్జన్యంగా దూకెయ్యండి అని ప్రేరేపించినట్టు కాదు కదా ? అలా అయితే బారికేడ్ చేసిన రోడ్లకు ఇవతల సత్యాగ్రహం చేయాలని గాంధీజీ చెప్పడం కూడా దౌర్జన్యానికి పురికొల్పడమే కాదా ? హరిజనులకు ఆలయ ప్రవేశాన్ని గాంధీ కోరితే ఒప్పు; ఆలయంలోకి ప్రవేశించండి అని నారాయణగురు నిజంగానే ఉద్బోధిస్తే తప్పు అనుకోవాలా ?

అవర్ణులకు కావలసిన హక్కులను సవర్ణులు దయ తలచి ఇవ్వాల్సిందే తప్ప అవర్ణులు ఒక హక్కుగా అడిగి రాబట్టకూడదని గాంధీజీ సిద్ధాంతం. పాపం వారిని దయ చూడమని మహాత్ముడు బోధించిన మీదట అనేక వందల మంది సవర్ణులు వైకోం నుంచి ఊరేగింపుగా తిరువనంతపురం వెళ్లి పాతికవేల మంది సవర్ణుల సంతకాలతో అప్పటి రిజెంటు మహారాణి సేతు లక్ష్మీబాయికి విజ్ఞాపన పత్రం ఇచ్చారు. వైకోం గుడి గోడలకు చుట్టూ ఉన్న రోడ్ల మీద, రాష్ట్రంలో ఇతరత్రా ఉన్న అటువంటి రోడ్ల మీద కుల మతాలతో నిమిత్తం లేకుండా పౌరులందరినీ తిరగనివ్వాలని అందులో కోరారు. అది చాలా సున్నితమైన వ్యవహారం; దానిపై నిర్ణయం చట్టసభే చేయాలని మహారాణి అభిప్రాయపడింది. అన్ని కులాల, మతాల వారికీ ఆలయ వీధుల్లో ప్రవేశం కల్పించాలన్న తీర్మానం లెజిస్లేచరులో 1925 ఫిబ్రవరి 7న చర్చకు వచ్చింది. 21 మంది అనుకూలంగా, 22 మంది వ్యతిరేకంగా ఓటు వేశారు. ఒక్క ఓటు తేడాతో తీర్మానం వీగిపోయింది.

శాసనసభలో తీర్మానం ఓడిపోవటంతో సత్యాగ్రహులు డీలా పడ్డారు. ఛాందస వర్గాలకు పట్టపగ్గాలు లేకుండా పోయాయి. ఇందన్ తిరుత్తిళ్ నంబూద్రి అనే సంప్రదాయవాదుల నాయకుడు మనుషులను పెట్టి సత్యాగ్రహులను చితకబాదించాడు. పక్కనే ఉన్న పీకలలోతు జలాశయంలోకి వాళ్లను పడేయించాడు. నిమ్మ రసాయనాన్ని కళ్లలో చిమ్మించి చాలామందికి చూపు పోగొట్టించాడు. కళ్లెదుటే ఇన్ని అఘాయిత్యాలు జరుగుతున్నా పోలీసు చోద్యం చూస్తూ ఉండిపోయారు. ఈ అత్యాచారాలకు నిరసనగా సంస్థానమంతటా ఆందోళనలు లేచాయి. పెద్ద దేవాలయాలను ఆందోళనకారులు బహిష్కరించారు. వాటి రాబడి పడిపోయింది. దీనికి ప్రతిగా సువర్ణ మహాజనసభ పలుచోట్ల సత్యాగ్రహానికి వ్యతిరేకంగా సభలు పెట్టి జనాలను రెచ్చగొట్టింది. పోటాపోటీగా ఆందోళనలతో పరిస్థితి ఉద్రిక్తమైంది. ఆషామాషీ సత్యాగ్రహాలు పనికిరావు. తడాఖా చూపించాల్సిందేనన్న పౌరుషం సత్యాగ్రహుల్లో క్రమేణా అలుముకుంది. ఆలస్యం చేస్తే పరిస్థితి చేయి దాటిపోయేట్టు ఉన్నదని ఎంతోమంది గాంధీకి మొరపెట్టుకున్నారు.

వేడికోళ్లు ఫలించాయి. రాజగోపాలాచారి, అల్లాడి కృష్ణస్వామి, మహదేవ్ దేశాయి, కుమారుడు రామదాస్ గాంధి వెంటరాగా 1925 మలిర్చి 9న గాంధీజీ మోటారు బోటులో వైకోంలో అడుగుపెట్టాడు. అందంగా అలంకరించిన మర పడవలు ఎదురేగి మేళతాళాల మధ్య ఆయనను తోడ్కొని వచ్చాయి. అప్పట్లో వైకోం జనాభా ఐదువేలలోపు. మహాత్ముడిని దర్శించటానికి బాటకు ఇరువైపులా అభిమానులు రెండు మైళ్ల పొడవున గమికూడారని మరునాడు **మలయాళ మనోరమ** పత్రిక రాసింది. చుట్టుపట్ల గ్రామాల నుంచి భక్తులు విరగబడ్డారు. మనసు విరిగి, ప్లీడరు ప్రాక్టీసుకు మరలిపోయిన జార్జిజోసెఫ్ జాడ లేదు. అలాగే ఆలయ అధికారులు, వారి అనుయాయులు గాంధీజీని చూడటానికి పోలేదు. అంతగా కావాలనుకుంటే అతడే తమ దగ్గరికి రావాలని వారి పంతం.

ఊళ్లోకి వెళ్లగానే గాంధీగారు చేసిన మొదటి పని - గుడి పెద్దలకు వారిని కలవటానికి తాను వచ్చినట్టు కబురు చేయటం. ఆలయ ప్రాంగణంలో తమ నాయకుడు ఇందన్ తిరుత్తిళ్ సంబూద్రిగారి ఇంటి దగ్గరికి వచ్చి కనపడమని అటు నుంచి సెలవయింది. అక్కడికి అస్పృశ్యులకు అనుమతి లేదు. కాబట్టి అవర్ణులు ఆగిపోయారు. కొద్దిమంది ముఖ్య సహచరులతో గాంధీజీ బయలుదేరాడు.

ఎంత మహాత్ముడు అయినా గాంధీగారు వైశ్య కులస్థుడు. శ్రోత్రియుల లోగిలి లోపలికి వెళ్లేందుకు ఆయనకు యోగ్యత లేదు. కాబట్టి ఇంటి బయట వరండాలో భేటీ జరిగింది. గడప బయట గాంధీజీ; గడప లోపల అర్చకస్వాములు. తిరువాన్కూరు పోలీసుల స్టెనోగ్రాఫరు రాసుకునేందుకు సిద్ధంగా ఉన్నాడు. అక్కడ పూర్వాచార పరాయణుల ఛాందసత్వాన్ని నిలదీయవలసింది గాంధీ. కాని ఛాందసవర్గ నాయకుడే ఆయనను నిగ్గదీసి, ఇరుకున పెట్టాడు. మూడు గంటలపాటు సాగిన చరిత్రాత్మక సంభాషణ తాలూకు రికార్డులకు అర్కయివ్స్‌లో పరిశీలించిన Joseph Lelyveld ముఖ్యాంశాలను తన "Great Soul" గ్రంథంలో ఇలా ఉటంకించాడు.

ఇందన్ తిరుత్తిళ్ పట్టు వదవకుండా గాంధీని చేసిన క్రాస్ ఎగ్జామినేషన్ ఇలా సాగింది:

'హిందూ శాస్త్రాల దివ్యత్వాన్ని మహాత్మాజీ నమ్ముతారా ?' గాంధీగారి జవాబు: 'ఔను'

'మహాత్మాజీకి కర్మ సిద్ధాంతంలో నమ్మకం ఉందా?' 'ఉంది !' 'పునర్జన్మను నమ్ముతారా?' 'నమ్ముతాను'

'మరి పూర్వజన్మల్లో చేసిన పాపాలకు శిక్షగానే చండాలులకు ఈ గతి పట్టిందని ఒప్పుకోరా?'

'ఔననుకోండి. అలాగని అవర్ణులను శిక్షించే హక్కు అగ్రవర్ణాలకు ఎక్కడి నుంచి వచ్చింది ?'

'అది దైవ శాసనం' 'నిజం.. నిజం'

[Great Soul, *Joseph, Lelyveld,* p.189]

ఇదే పాయింటు మీద నిలదీసేసరికి గాంధి డిఫెన్సులో పడ్డాడు. పూర్వకర్మల వల్లే జన్మల్లో తేడాలుంటాయని, వెనకటి పాపాలకు శిక్షగానే చండాల జన్మ వచ్చిందని తానే అంగీకరించాక తక్కువ కులాల వారిని నీచంగా ఎలా చూస్తారన్న వాదనలో

పసపోయింది. తన మాటల ఉచ్చులో తానే ఇరుక్కున్నాక, దాని నుంచి బయటపడటానికి రిఫరెండం ద్వారా సవర్ణుల అభిప్రాయం తెలుసుకుని ఆ ప్రకారం చేద్దామని గాంధీ సూచించాడు. ఈ ప్రశ్నకు ఓటింగు ద్వారా తేల్చడానికి మేము ఒప్పుకోము అన్నాడు నంబూద్రి. గాంధీ కూచున్న ఆ స్థలాన్ని ఆయన తిరిగి వెళ్లాక నీళ్లతో కడిగి శుద్ధి చేయించాడు ఆ శ్రోత్రియుడు !

(అదే గ్రంథం, పే.191)

పూర్వజన్మలో చేసిన పాపాల వల్లే చండాల జన్మ వచ్చింది కనుక చండాలుల గాలి కోవెల పరిసరాలలో సోకడానికి నసేమిరా వీల్లేదని ఛాందసవర్గాలు పట్టుబట్టటంతో పరిష్కారం కుదరలేదు. వారి వాదాన్ని సూలంగా అంగీకరించాక, అస్పృశ్యులపై ఆంక్షను తప్పుపట్టేందుకు తెరువు తోచక గాంధీజీ వట్టి చేతులతో లేచి వచ్చాడు. సత్యాగ్రహం కొనసాగింది. అవర్ణులపై అఘాయిత్యాలూ చెలరేగాయి. ప్రతిష్టంభనను తొలగించమని తిరువాన్కూరు పోలీసు కమిషనరుగా ఉన్న పిట్ అనే తెల్లవాడిని గాంధీ అడిగాడు. అతగాడు కష్టపడి, ప్రభుత్వంతో మాట్లాడాడు.

ప్రభుత్వం నిషేధాజ్ఞలను ఎత్తివేయాలని, అందుకు బదులుగా గాంధీ సత్యాగ్రహాన్ని ఉపసంహరించాలని ఒప్పందం కుదిరింది. గుడికి ఉత్తర, దక్షిణ, పడమర దిక్కుల ఉన్న రోడ్లపై అన్ని కులాల, అన్ని మతాల వారిని అనుమతిస్తారు. కాని అసలైన తూర్పు వైపు ప్రధాన వీధిలో మాత్రం అస్పృశ్యులను ఇక ముందూ తిరగనివ్వరు. ఇంతకు ముందు క్రైస్తవ, మహమ్మదీయ మతస్థులను అనుమతించేవారు. ఇకపై వారికీ ప్రవేశం బంద్ !

అంటే - పరిష్కారం కుదరడానికి ముందు కంటే కుదిరిన తరవాత ఆంక్షలు ఎక్కువయ్యాయి. తూర్పు గోపురం వైపు అతి ప్రధానమైన కోవెల వీధికి మూడు వైపులా గేట్లు బిగించి, సవర్ణులకు మాత్రమే అందులో ప్రవేశం కల్పించటంవల్ల దళితులతో బాటు అన్య మతాల వారికీ అన్యాయం జరిగింది. వనికివూలిన పరిష్కారం కుదరగానే ఆందోళనను అపేయమని సత్యాగ్రహ ఆశ్రమ కార్యదర్శిని అక్టోబరు 8న మహాత్ముడు ఆజ్ఞాపించాడు.

అస్పృశ్యత కథ కంచికి-గాంధీ ఇంటికి!

सर्वथा रहित है, मरने व नष्ट न होने वाला अविनाशी है, वह किसी से डरता नहीं है अपितु उसके न्याय से बुरे काम वा पाप करने वाले मनुष्य एवं अन्य प्राणी डरते हैं, नित्य अर्थात वह ईश्वर सदा से है और सदा रहेगा, उसका कभी अभाव नहीं होगा, वह पवित्र और पवित्रतम है और इस सारे ब्रह्माण्ड को उसी ने बनाया है। यह भी जानने योग्य है कि ईश्वर जीवात्माओं के पूर्व कल्प में किये गये पाप–पुण्यों वा प्रारब्ध का सुख व दुःख रुपी भोग कराने के लिए इस सषष्टि की रचना कर इसे धारण करता है। जीवात्मा व सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के उपकारों के प्रति कष्तज्ञता व्यक्त करने के लिए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करें। संसार में स्तुति–प्रार्थना व उपासना करने योग्य वही एकमात्र ईश्वर है क्योंकि वह अनादि काल से अनन्त काल तक हमारे साथ सखा व मित्र की तरह रहने वाला हमारा कल्याण करने वाला, बन्धु, माता, पिता, रक्षक, पालक व जन्म–मष्त्यु–मोक्ष सहित सुख एवं आनन्द प्रदान देने वाला है। जो व्यक्ति ईश्वर की योग विध‍ि ा से स्तुति–प्रार्थना–उपासना नहीं करता है वह कष्तघ्न, महामूर्ख व पापी होता है व जन्म–जन्मान्तरों में दुःख भोगता है।

मनुष्य उन्नति का तीसरा स्वर्णिम नियम है कि **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब श्रेष्ठ मनुष्यों, जिन्हें संस्कष्त में आर्य कहते हैं, का परम धर्म है।'** वेदों के यथार्थ स्वरूप का अध्ययन करने पर इस तथ्य व रहस्य का ज्ञान होता है कि वेद सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक व ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ सषष्टि की आदि में अस्तित्व में आया। अनुसंधान करने पर ज्ञात होता है कि यह किसी मनुष्य की रचना नहीं है अपितु यह सांसारिक मनुष्य की सभी साहित्यिक व अन्य ग्रन्थों का आधार है। मनुष्य की बुद्धि को ज्ञान की आवश्यकता होती है। सषष्टि के आरम्भ में पहली पीढ़ी के अमैथुनी सषष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने वाले माता–पिता व आचार्य तो होते नहीं हैं। अतः मनुष्य को ज्ञान मिलना असम्भव होता है। न वह बोल सकता है और प्रकषति में होने वाली ध्वनियों को वह समझ सकता है। ईश्वर सर्व विद्याओं का आध‍ ार व मूल स्रोत है। वह सर्वव्यापक व सर्वान्र्यामी है। उसका सषष्टि बनाने व प्राणी मात्र को उत्पन्न करने के साथ यह कर्तव्य भी है कि वह आदि सषष्टि के प्रथम पीढ़ी के मनुष्यों को ज्ञान व भाषा प्रदान करे। **वही आदि सषष्टि में मनुष्यों को सबसे पहले ज्ञान देता है जिसे वेद कहते हैं।** ईश्वर ने सषष्टि की आदि में यही वेद ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा के द्वारा दिया वा स्थापित किया था। इन ऋषियों ने अन्य मनुष्यों को इसका अध्ययन कराया और उसके बाद यह अध्ययन अद्यावधि होता आ रहा है। आज भी वेद मूल रुप में सुरक्षित हैं। इसकी पुष्टि कोई भी व्यक्ति इनका अध्ययन करके कर सकता है। वेदों में परा व अपरा अर्थात् आध्यात्मिक और सांसारिक सभी प्रकार का यथार्थ ज्ञान उपलब्ध है। वेदों में अन्य धर्म ग्रन्थों की तरह से कहानी किस्से या इतिहास किंचित भी नहीं है। यह विवेचित तथ्य है कि यदि ईश्वर वेदों का ज्ञान न देता तो मनुष्य बिना ईश्वर की सहायता के भाषा की उत्पत्ति नहीं कर सकता था जिससे उसका जीवन निर्वाह न हो सकने के कारण संसार आगे नहीं चल सकता था, आरम्भ में वहीं समाप्त होना निश्चित होता है। ऐसा इसलिए कि मनुष्यों को

'ईश्वर व जीवात्मा का यथार्थ उपदेश देने से महर्षि दयानन्द विश्वगुरु हैं'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

यह संसार वैज्ञानिकों के लिए आज भी एक अनबुझी पहेली ही है। आज भी वैज्ञानिक इस सष्टि के स्रष्टा की वास्तविक सत्ता व स्वरुप से अपरिचित हैं। यदि उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह वेदों की शरण ली होती तो वह इस रहस्य को जान सकते थे। आज का संसार दोहरे मापदण्डों वाला संसार है। बिना जाने व समझे वेदों को भी अन्य मतों के धार्मिक ग्रन्थों के समान एक धार्मिक ग्रन्थ मान लिया गया है। इसके पीछे कुछ विदेशियों का अपना स्वार्थ दिखाई देता है जिससे उनके मतों की वास्तविकता समाज के सामने न आ जाये। सच्चाई यह है कि वेद अन्य मत–मतान्तरों की तरह, रूढ़ अर्थ में प्रयोग धर्म, की धार्मिक पुस्तक नहीं है अपितु यह सब सत्य ज्ञान व विद्या की पुस्तक हैं। वेद आज भी अपने मूल स्वरुप में विद्यमान हैं। वेदों की उत्पत्ति सष्टि के आरम्भ में इस सष्टि के रचयिता सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी परमेश्वर के द्वारा हुई थी। उन्होंने सष्टि और मनुष्य के कर्तव्यों आदि का विस्तष्त ज्ञान आदि सष्टि में वेदों के माध्यम से चार ऋषियों की हष्दय गुहा में अन्तः प्रेरणा द्वारा दिया था। वेदों का ज्ञान मन्त्रों के रूप में दिया गया है जो कि संस्कष्त में है। इन वेद मन्त्रों के अध्ययन से ही संस्कष्त भाषा की उत्पत्ति हुई है। पहले सष्टि की आदि में ईश्वर ने चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया। फिर इन ऋषियों ने अन्य लोगों में वेदों का प्रचार किया। वेद ज्ञान दिये जाने से पूर्व किसी भाषा का अस्तित्व नहीं था। यह वेद ज्ञान व वेद मन्त्र ही भाषा के प्रथम आधार व संस्कष्त भाषा के मूल स्रोत हैं। सष्टि के आरम्भ के अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा व ब्रह्मा आदि ऋषि ईश्वर के स्वरूप के साक्षात्कर्ता थे जिन्हें वेदों के सत्य अर्थों का यथार्थ ज्ञान था और उन्होंने इनका प्रचार कर संसार से अज्ञान व सभी भ्रान्तियों को दूर किया। महाभारतकाल तक यह व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रही। महाभारत का युद्ध होने के बाद अध्ययन अध्यापन में बाधा उत्पन्न हुई। वेद मन्त्रों के अर्थ जानने की योग्यता संसार के लोगों में न रही, इस कारण वेदों के अनेक भ्रान्तिपूर्ण व मिथ्या अर्थ प्रचलित हो गये। इसी कारण संसार में अज्ञान का अन्ध कार फैला और नाना मत–मतान्तर उत्पन्न हुए। समाज के कुछ प्रबुद्ध लोगों ने अपनी–अपनी बुद्धि व योग्यतानुसार शिक्षा का प्रचार किया। प्रायः उनके अनुयायियों ने उन्हें दिव्य मनुष्य या महापुरूष मानकर प्रचारित किया। यह दावा किया गया कि उन मतों की सभी शिक्षायें सत्य व यथार्थ हैं, जबकि ऐसा नहीं था। सभी मतों में सत्य व असत्य का मिश्रण है जिसका दिग्दर्शन **महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825–1883)** ने अपने ग्रन्थों मुख्यतः सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम 4 अध्यायों में कराया है।

महर्षि दयानन्द के समय में सभी मत मतान्तरों में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति के स्वरुप को लेकर भ्रम की स्थिति थी। उन्होंने भ्रम निवारण करते हुए ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति, इन तीन सत्ताओं के त्रैतवाद का सिद्धान्त संसार के सम्मुख रखा। ईश्वर सहित तीनों पदार्थों का सत्यस्वरूप सामने रखते हुए उन्होंने इन तीनों सत्ताओं को अनादि व नित्य बताया। उनका मानना था कि ईश्वर, जीवात्मा व मूल–कारण प्रकषति अनुत्पन्न, अनादि व नित्य है। इस कारण यह तीनों सत्तायें अविनाशी व अमर भी हैं अर्थात् इनका नाश अथवा अभाव कभी नहीं होता। उनके समय में ईश्वर के विषय में बहुत सी मिथ्या मान्तयायें प्रचलित थी जो आज भी प्रचलित ने केवल प्रचलित हैं अपितु इनमें वषद्धि हुई है। स्वामीजी ने उन सभी का खण्डन व आलोचना की और ईश्वर के सत्यस्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि ईश्वर सच्चिदानन्द–स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सष्टि का कर्त्ता–धर्त्ता–हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है। इन लक्षणोवाली सत्ता को ही परमेश्वर मानना और उसी की उपासना करना सबके लिए लाभकारी व श्रेयस्कर है। ईश्वर के इन लक्षणों से अवतारवाद व मूर्तिपूजा सहित इनके विपरीत ईश्वर विषयक सभी मान्यताओं का खण्डन हो जाता है। ईश्वर की **उपासना का सर्वोत्कष्ट ग्रन्थ महर्षि पतंजलि का योग दर्शन है।** उसका अध्ययन कर ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपने व्यापक वेद और वैदिक साहित्य के अध्ययन व ज्ञान के आधार पर उपासना की सरलतम विधि वैदिक सन्ध्या लिखी है। इसी के आधार पर आज संसार के करोड़ों लोग उपासना करते हैं। इस सन्ध्या की विधि में योगदर्शन की उपासना पद्धति का निचोड़ वा सार प्रस्तुत किया गया है जिसका अभ्यास करके मनुष्य ईश्वर व अपनी आत्मा दोनों

का साक्षात्कार कर सकता है। ईश्वर सहित अन्य सभी विषयों व विद्याओं का अध्ययन करने के लिए मनुष्यों को सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से अध्ययन का आरम्भ कर उपनिषद, दर्शन, मनुस्मषति व वेदों का अध्ययन करना चाहिये जिससे सभी शंकायें व भ्रान्तियां दूर होती हैं। इसके साथ हि साधना के सरल व प्रभावशाली उपायों का ज्ञान होने से मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य, ईश्वर का साक्षात्कार, की प्राप्ति होकर जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थों में जीवात्मा के सत्य स्वरुप पर भी प्रकाश डाला है। अपने लघु ग्रन्थ **'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश'** में **'जीव'** विषयक अपनी मान्यता लिखते हुए वह बताते हैं कि जीवात्मा इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, ज्ञानादि गुणयुक्त, अल्पज्ञ, नित्य व चेतन सत्ता है। नित्य का अर्थ है कि यह जीव हमेशा से है और हमेशा रहेगा अर्थात् यह अनुत्पन्न और अविनाशी सत्ता है। जीवात्मा को अपने पूर्व जन्मों के कर्मानुसार जीवन व योनि मिलती है जिसमें वह अपने प्रारब्ध के अनुसार फल भोग कर व नये कर्मों को करके मष्त्यु को प्राप्त होती है और मष्त्यु के पश्चात प्रारब्ध के अनुसार पुनः नया जन्म धारण करती है। जन्म–मरण का यह चक्र अनादि काल से चला आ रहा है और इसी प्रकार सदा चलता रहेगा जब तक कि वेदानुसार सद्कर्मों को करके जीवात्मा की मुक्ति न हो जाये। मनुष्य यदि अच्छे कर्म करता है तो उसकी उन्नति होती है जिससे वह मष्त्यु के बाद श्रेष्ठ उन्नत योनि व अवस्थाओं में जन्म ग्रहण करता है और यदि उसके अच्छे कर्म कम व बुरे कर्म अधिक होते हैं तो वह अवनति को प्राप्त होकर निम्न योनियों में जन्म ग्रहण करता है जहां उसे अपने बुरे कर्मों के फलों को भोगना होता है। महर्षि दयानन्द के यह विचार भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं कि जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य–व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं। अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था, न है और न होगा, इसी प्रकार परमेश्वर और जीव का व्याप्य–व्यापक, उपास्य–उपासक और पिता–पुत्र आदि सम्बन्ध है।

कारण व कार्य प्रकषति जड़ है। कारण प्रकषति अनुत्पन्न तथा त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रज व तमोगुण वाली है। यही परमाणु व अणुरूप होकर स्वरूपाकार से बहुत प्रजारूप हो जाती है अर्थात् यह प्रकषति परिणामिनी होने से अवस्थान्तर अर्थात् परिवर्तनों को प्राप्त होकर नाना स्वरूप व आकारवाली हो जाती है। पषथिवी, चन्द्र, ग्रह–उपग्रह, सूर्य, नक्षत्र आदि सभी इस त्रिगुणात्मक प्रकषति के विकार वा कार्य हैं। इसको विस्तार से जानने के लिए सांख्य दर्शन सहित वेदों के नासदीय सूक्त आदि का अध्ययन करना चाहिये। यह भी जानने योग्य है कि यह सषष्टि प्रवाह से अनादि है अर्थात् इस प्रकषति से सषष्टि का निर्माण होता है, सषष्टि निर्धारित अवधि तक बनी रहती है, फिर प्रलय होती है और प्रलय में यह पुनः अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। प्रलयकाल समाप्त होने पर ईश्वर सषष्टि की रचना कर इसे पुनः उत्पन्न करता है व चलाता है तथा यथासमय प्रलय करता है। इस प्रकार से सषष्टि की उत्पत्ति व प्रलय का कम अनादि काल से चला आ रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा।

महर्षि दयानन्द ने न केवल तीन अनादि पदार्थ ईश्वर, जीव व प्रकषति के सत्य सिद्धान्त **'त्रैतवाद'** व इनके स्वरूप का ही प्रचार किया अपितु वेदों का पुनरुद्धार भी किया। वेद ही मानव मात्र का सबसे बड़ा धन व पूंजी है। वेद से ही कर्तव्य–अकर्तव्य का बोध होता है जिसे **'धर्माधर्म'** कहते हैं। इस धर्माधर्म से ही मनुष्य को बन्ध व मुक्ति होती है। महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण कार्यों को जानने के लिए सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि सहित उनके समस्त ग्रन्थ, उनके जीवन चरितों और पत्रव्यवहार आदि का अध्ययन करना चाहिये। उन्होंने ईश्वर की सच्ची उपासना के साथ अन्य महायज्ञों देवयज्ञ, पितष्यज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ का भी पुनरुद्धार किया। इसका अवलम्बन कर मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इस संक्षिप्त लेख में हम पाठकों को महर्षि दयानन्द को परा विद्या के क्षेत्र में संसार को ईश्वर, जीव व प्रकषति के सत्य व यथार्थ स्वरूप से परिचित कराने व मनुष्यों को धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष के मार्ग का ज्ञान कराकर मोक्ष तक पहुंचाने के लिए संसार का सबसे बड़ा हितैषी व पुरोधा मानते हैं। महाभारत काल के बाद अन्य कोई महापुरूष ऐसा नहीं हुआ जिसने मनुष्य को संसार विषयक समस्त "सत्य ज्ञान" से परिचित कराया हो जैसा महर्षि दयानन्द ने कराया है। महर्षि दयानन्द **'न भूतो न भविष्यति'** महापुरूष थे। उनके मनुष्य जीवन की इहलौकिक व पारलौकिक उन्नति में योगदान को स्मरण कर संसार के सभी मनुष्यों को लाभ उठाना चाहिये।

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-12-2015 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
Vithal Rao Arya
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad -95
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946 Editior:
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

छोटे से छोटा व्यवहार करने के लिए वा चिन्तन व विचार करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है जिसके न होने व फलतः स्वयं व परस्पर व्यवहार न होने से जीना सम्भव नहीं होता। पशुओं की बात और है, उन्हें ईश्वर ने अपने सभी काम करने के लिए आवश्यकता के अनुरुप ज्ञान दिया है जिससे वह अपने सभी कार्य सुगमतापूर्वक करते हैं। मनुष्य इस स्वभाविक ज्ञान की दर्षिट से पशुओं से काफी पीछे है।

जीवन उन्नति का चौथा नियम है कि **'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।'** पांचवा नियम है कि **'सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।'** छठा नियम है कि **'संसार का उपकार करना मनुष्य व समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'** सातवां नियम है कि **'सबसे प्रीति–पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।'** आठवां नियम है कि **'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।'** यह सभी नियम निर्विवाद हैं और अत्यन्त सरल भी हैं। अतः इस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। हां, उनका पालन करने से उन्नति और पालन न करने से जीवन की अवनति होना सुनिश्चित है, इसकी कल्पना की जा सकती है। इतना कहना उचित होगा कि अविद्या व अज्ञान का नाश करना भी सभी मनुष्यों का कर्तव्य व धर्म है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो जीवन व समाज में अविद्या में वृद्धि होगीं जो नाना प्रकार की समस्याओं को जन्म देंगी जैसा कि आजकल समाज में देखने को मिल रहा है। अविद्या से उत्पन्न इन सामाजिक बुराईयों में अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असमानता, अस्पर्शयता, लोगों को शिक्षा के अधिकार से वंचित करना व आतंकवाद सहित अ हेष्णुता का ढोंग करना आदि भी शामिल हैं। मनुष्य जीवन की सफलता के लिए नवां स्वर्णिम नियम है कि **'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।'** इस नियम में महत्वपूर्ण व आवश्यक बात यह कही गई है हमें अपनी उन्नति तो करनी ही है परन्तु दूसरों की उन्नति करने पर भी हमें सम्यक् ध्यान देना व पुरुषार्थ करना है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो बहुत से लोग उन्नति से वंचित होकर पिछड़ जायेंगे जो उन्नत व्यक्तियों के लिए ही कष्टदायक होगा। आज समाज में इसका प्रभाव सर्वत्र देखने को मिलता है। चोरी, लूट व भ्रष्टाचार आदि इसी कारण से तो है कि अविद्या का नाश नहीं किया गया और दूसरों की उन्नति की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। पाठक इन सभी नियमों पर विचार कर इसके लाभों व न मानने से होने वाली हानियों पर और अधिक विचार कर सकते हैं। अन्तिम दसवां स्वर्णिम नियम है कि **'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व–हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'** सामाजिक सर्व–हितकारी नियम में चरित्र निर्माण, अनुशासन, स्वच्छ व पवित्र जीवन तथा भ्रष्टाचार मुक्त व्यवहार, सहिष्णुता आदि अनेक बातें आती हैं। इससे न केवल देश व समाज उन्नत होता है अपितु व्यक्तिगत जीवन भी उन्नत होता है। **जिस परिवार, समाज व देश में इन नियमों का व्यवहार किया जायेगा, उसकी कायापलट हो जायेगी और वह परिवार, समाज व देश सुख–शान्ति–समृद्धि–आरोग्यता–प्रसन्नता–उल्लास से युक्त होकर स्वर्ग व मुक्ति का अधिकारी होगा।**

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor: VithalRao Arya ● acharyavithal@gmail.com

సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५.